

वांवा

कक्षा 9 के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक



0801

विद्यया ऽ मृतमश्नुते



एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

0901 – गंगा

कक्षा 9 के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक

ISBN 978-93-5729-873-5

प्रथम संस्करण

मार्च 2026 चैत्र 1948

PD 1000T BS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण

परिषद्, 2026

₹ 115.00

एन.सी.ई.आर.टी. वॉटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशन
प्रभाग में प्रकाशित तथा सालासर इमेजिंग सिस्टम्स
प्राइवेट लिमिटेड, बी-19, सेक्टर-88, नोएडा 201305,
उत्तर प्रदेश द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटो प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रचारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की विक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। खंड की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

रा.शै.अ.प्र.प. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैपस

श्री अरविंद मार्ग

नई दिल्ली 110 016

फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड

हेली एक्सटेंशन, होस्टेकेरे

बनाशंकरा III इस्टेज

बेंगलुरु 560 085

फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन

डाकघर नवजीवन

अहमदाबाद 380 014

फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैपस

निकट : धनकल बस स्टॉप पनिहटी

कोलकाता 700 114

फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स

मालीगाँव

गुवाहाटी 781 021

फोन : 0361-2676869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : एम.वी. श्रीनिवासन

मुख्य संपादक : बिज्ञान सुतार

मुख्य व्यापार प्रबंधक : अमिताभ कुमार

मुख्य उत्पादन अधिकारी (प्रभारी) : दीपक जैसवाल

सहायक उत्पादन अधिकारी : प्रकाश वीर सिंह

आवरण, चित्रांकन एवं सज्जा

जोएल गिल

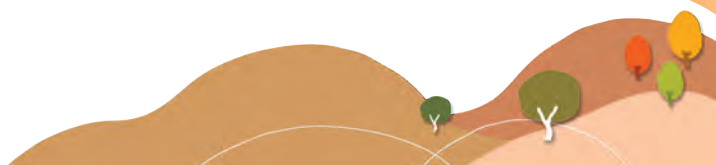
आमुख

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की संकल्पना करती है जो भारत के सभ्यतागत ज्ञान, मूल्यों और नैतिक परंपराओं को अपने में समाहित करती हो। यह शिक्षा प्रणाली हमारे विद्यार्थियों को निरंतर परिवर्तनशील वैश्विक जटिलताओं और संभावनाओं के साथ हमारी समृद्ध बौद्धिक विरासत से सार्थक रूप से जुड़ने में सक्षम बनाती है। विद्यालयी शिक्षा के लिए निर्मित 'राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023' में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सुझावों को व्यावहारिक रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसमें विद्यालयी शिक्षा के सभी स्तरों के लिए एक ऐसे सुसंगत पाठ्यक्रम का मार्ग प्रशस्त किया गया है जो विद्यार्थियों में आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता व संवेदनशीलता और मौलिकता के साथ-साथ उनमें मूल्यों को विकसित करने की दिशा देता है। यह परस्पर जुड़े हुए वैश्विक समाज में उन्हें उत्तरदायी नागरिक बनाने के लिए आवश्यक है।

बुनियादी, प्रारंभिक और मध्य स्तर पर आगे बढ़ते हुए विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमता समग्र रूप से निखरती गई है। अब, वे सोचने, तर्क करने, प्रश्न पूछने और स्वयं को अभिव्यक्त करने की क्षमता के साथ माध्यमिक स्तर में प्रवेश करेंगे। कक्षा 9 से 12 तक विद्यार्थी किशोरावस्था में होते हैं, यह विद्यार्थियों के बौद्धिक और व्यक्तिगत विकास के लिए एक महत्वपूर्ण समय होता है। यह उन्हें अमूर्त विचारों, जटिल सामाजिक वास्तविकताओं, नैतिक दुविधाओं और ज्ञान के विस्तृत संसार से जुड़ने के लिए तैयार करता है; साथ ही स्वयं तथा अपने आस-पास के संसार के बारे में उनकी समझ को सारगर्भित भी बनाता है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 माध्यमिक स्तर में कक्षा 9-10 के लिए ऐसे कौशल सीखने पर बल देती है जो विद्यार्थियों के लिए जीवन में आगे बढ़ने में सहायक हों ताकि विद्यार्थी इन कौशलों का प्रयोग तर्क, संवाद और प्रभावपूर्ण भाषिक व्यवहार के लिए कर सकें। इसका उद्देश्य उनकी विश्लेषणात्मक और वर्णनात्मक क्षमताओं को बढ़ाना भी है ताकि वे भविष्य में आने वाली चुनौतियों और अवसरों के लिए तैयार हो सकें। यह रूपरेखा बहुआयामी पाठ्यक्रम का सुझाव देती है जिसमें तीन भाषाओं सहित दस विषय शामिल किए गए हैं। भाषाओं के संबंध में यह भी बताया गया है कि तीन में से कम से कम दो भारतीय मूल की भाषाएँ हों। इसके अतिरिक्त विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान, कला शिक्षा, शारीरिक शिक्षा और आरोग्य, समाज में व्यक्ति/पर्यावरण शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा को विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रस्तावित किया गया है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में भाषाओं की शिक्षा को महत्व दिया गया है। माध्यमिक स्तर पर भाषा का सिर्फ संप्रेषण/अभिव्यक्ति के माध्यम के तौर पर नहीं बल्कि सृजनात्मक क्षमता, सोचने, समझने, संवाद करने और सौंदर्यबोध के लिए विशेष रूप से महत्व है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की



रूपरेखा 2023 इस बात पर भी बल देती है कि भाषा की पढ़ाई विद्यार्थियों में तार्किक, विश्लेषणात्मक और रचनात्मक क्षमताओं के साथ-साथ अंतरसांस्कृतिक समझ भी बनाए और वे अकादमिक, सामाजिक और व्यावसायिक क्षेत्रों में आत्मविश्वासपूर्वक भाग लेने में सक्षम बन सकें। इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए कक्षा 9 के लिए हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक *गंगा* को अभिकल्पित किया गया है।

गंगा पाठ्यपुस्तक में हिंदी के ऐसे विविध रूपों, शैलियों से संबंधित रचनाओं को सम्मिलित किया गया है जिनमें सामाजिक-सांस्कृतिक और भौगोलिक विविधता परिलक्षित होती है। पाठ्यपुस्तक में विषयों का चयन इस प्रकार किया गया है कि विद्यार्थी समाज, पर्यावरण, नैतिक समझ/मूल्यपरक समझ/विवेकसम्मत दृष्टि, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, सामयिक विषयों और मानवीय संबंधों से युक्त अन्य पहलुओं से जुड़ सकें। इससे विद्यार्थी अपने उस परिवेश के बारे में गंभीरता से सोचने के लिए प्रोत्साहित होंगे जिसमें वे रहते हैं। यह पाठ्यपुस्तक भारत की कलात्मक, साहित्यिक और बौद्धिक परंपराओं पर आधारित है, जिसमें भारतीय ज्ञान प्रणालियों और हमारी सांस्कृतिक विरासत के तत्वों को समावेशित किया गया है और उन्हें हमारे समकालीन अनुभवों से सहजता से जोड़ा गया है।

पाठ्यपुस्तकें सीखने का एकमात्र संसाधन नहीं हैं, इस बात को ध्यान में रखते हुए *गंगा* पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों को अन्य पुस्तकों, मीडिया, डिजिटल अभिलेखागार, पुस्तकालय और सामुदायिक ज्ञान के व्यापक धरातल से जुड़ने के लिए प्रेरित करती है। इस स्तर पर पढ़ने, संवाद करने और स्वयं से खोज करने की एक अच्छी संस्कृति को बढ़ावा देने में शिक्षक, माता-पिता और विद्यालय के पुस्तकालय महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पाठ्यपुस्तक हर पाठ में क्यू.आर. कोड का प्रयोग करके तकनीकी रूप से विद्यार्थियों को अतिरिक्त पठन सामग्री उपलब्ध कराती है, जो उन्हें सृजनात्मक अनुभव से संपृक्त करने में सक्षम है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, पाठ्यपुस्तक के निर्माण में सम्मिलित विषय विशेषज्ञ, शिक्षाशास्त्रियों, शिक्षकों, हितधारकों का आभार व्यक्त करती है। हमें विश्वास है कि *गंगा* पाठकों/विद्यार्थियों को गंभीरता से सोचने, आत्मविश्वास से बात करने और हमारे देश और दुनिया के बौद्धिक और सामाजिक जीवन में सोच-समझकर प्रतिभागिता हेतु प्रेरित करेगी। अगले संस्करण में सुधार के लिए हम इसके सभी हितधारकों से सुझाव और टिप्पणी का भी स्वागत करते हैं जिनसे भावी संशोधनों में सहायता ली जा सकती है।

फरवरी 2026
नई दिल्ली

दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

यह पुस्तक

संपूर्ण शिक्षा प्रक्रिया में भाषा का केंद्रीय स्थान है। भाषा की शिक्षा विभिन्न स्तरों पर विद्यार्थियों के दृष्टिकोण और मूल्यों का विकास करती है। नवीं कक्षा के लिए हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक *गंगा* आपके सामने है। यह पुस्तक नवीं कक्षा के उन विद्यार्थियों के लिए है जो पहली कक्षा से हिंदी पढ़ते आ रहे हैं और आठ वर्षों तक हिंदी का विधिवत अध्ययन कर चुके हैं। नवीं के ये विद्यार्थी किशोर विद्यार्थी हैं जिनका भाषा और विचार-बोध का एक आधार तैयार हो चुका है। अब उनके भाषिक दायरे और वैचारिक समृद्धि को विकसित करने की आवश्यकता है ताकि वे आगे चलकर अपनी रुचि और आवश्यकता के अनुरूप हिंदी भाषा और साहित्य की पढ़ाई कर सकें। वे भाषिक रूप से इतने दक्ष हो जाएं कि हिंदी उनके विमर्श और ज्ञान-विज्ञान की भाषा भी बन सके।

पाठ्यपुस्तक पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम का मूर्त रूप होती है जिसमें पाठ्यक्रम के उद्देश्य बहुत बारीकी से पिरोए जाते हैं। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* तथा *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023* में जिन बिंदुओं की ओर विशेष रूप से ध्यान आकर्षित किया गया है, उन बिंदुओं को इस पाठ्यपुस्तक में रचनात्मक रूप से समाहित करने की कोशिश की गई है। शिक्षकों और विद्यार्थियों द्वारा पाठ्यपुस्तक के दक्षतापूर्ण उपयोग पर ही उसकी संपूर्णता निर्भर करती है। वर्तमान समय में शिक्षा का शास्त्र और व्यवहार विद्यार्थियों की सहभागिता को ही दक्षता का पर्याय मानता है, इसलिए विद्यार्थियों को केंद्र में रखकर ही इस पुस्तक का ताना-बाना बुना गया है। अतः शिक्षकों द्वारा पाठ्यपुस्तक का दक्षतापूर्ण उपयोग भी तभी संभव है जब उनकी तमाम शिक्षण तकनीकों के केंद्र में विद्यार्थी हों। इस दृष्टि से शिक्षक की भूमिका किसी उपदेशक या एकतरफा ज्ञान प्रदान करने वाले के रूप में नहीं हो सकती। पाठ्यपुस्तक की सामग्री का रचनात्मक उपयोग करने के लिए उसे एक प्रेरक की भूमिका निभानी पड़ेगी। विद्यार्थियों के किशोर मानस को ध्यान में रखकर शिक्षक को अपने तमाम शिक्षण कार्य के दौरान भाषा और साहित्य के अध्ययन-अध्यापन की चली आती परंपरागत पद्धतियों से आगे जाना पड़ेगा ताकि विद्यार्थी आधुनिक जीवन के परिवेश, समकालीन यथार्थ और दिन-प्रतिदिन के बदलते जीवन की चुनौतियों के बीच मानव मूल्यों के प्रति अडिग आस्था बनाए रखने की प्रेरणा प्राप्त कर सकें।

पाठगत बाधाओं को दूर करते हुए विद्यार्थियों की सहभागिता को सही दिशा प्रदान करने का काम शिक्षक ही कर सकता है। शिक्षक पाठ पढ़ाने के साथ पुस्तक में निर्देशित शैक्षिक गतिविधियों को कराते हुए विद्यार्थियों की भाषिक कुशलताओं को बढ़ाता है और जीवन-जगत के संबंध में उनके अनुभव क्षेत्र का विस्तार करता है। विद्यार्थियों को अपनी सांस्कृतिक धरोहर से जोड़ने का काम भी भाषा और साहित्य की शिक्षा ही करती है, इसलिए भारत के बहुभाषी परिवेश को शिक्षण पद्धति का हिस्सा बनाना होगा



और उसे एक संसाधन के रूप में शामिल करना होगा। साझी संस्कृति, सामाजिक दृष्टि से उपेक्षित समाज, बालिकाओं के प्रति समान दृष्टिकोण, शारीरिक रूप से चुनौतीपूर्ण वर्ग और पर्यावरण एवं शांति जैसे संवेदनशील मुद्दे शिक्षकों से सकारात्मक व्यवहार की माँग करते हैं।

हम सभी जानते हैं कि शिक्षण की कोई एक विधि नहीं होती। हर शिक्षक अपने ढंग से पढ़ता-पढ़ाता है परंतु मौलिकता और सृजनात्मकता द्वारा शिक्षण को रुचिकर बनाया जा सकता है। सहायक सामग्री (संदर्भ से जुड़ी नई पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ, ऑडियो-वीडियो, चित्र आदि) का उपयोग करते हुए शिक्षण को एकरसता और यांत्रिकता से बचाया जा सकता है। शिक्षक अपने कक्षा-अध्यापन को इस तरह व्यवस्थित करें कि विद्यार्थियों को भाषा शिक्षण के सभी कौशलों के विकास का समुचित अवसर मिले, साथ ही विद्यार्थियों के भीतर जो कल्पनाशीलता, विस्मय, कौतूहल, जिज्ञासा एवं सृजनात्मकता है, उसे विकसित किया जा सके।

हम जानते हैं कि साहित्य अंतरविषयी होता है और उसे समझने-समझाने के कोई पूर्व-निर्धारित उपाय भी नहीं होते। अंततः जीवन-जगत की संपूर्णता में ही साहित्य के पढ़ने-पढ़ाने को विस्तार देना चाहिए। विशेष रूप से **कविता** का कथ्य साझेदारी के बिना पूरी तरह समझ में नहीं आ सकता। कविता का अर्थ खंडों में नहीं, समग्र प्रभाव के रूप में ही ग्रहण किया जाता है। शिक्षण में यह भी ध्यान रखना जरूरी है कि कविताओं का कोई एक निश्चित अर्थ नहीं होता है, इसीलिए विद्यार्थियों को कल्पना करने की पूरी छूट देनी चाहिए। कविता अपनी वाक्य संरचना, शब्दों की स्थिति एवं लय के कारण गद्य से भिन्न होती है। गद्य की भाषा हमारे दैनिक व्यवहार की भाषा के निकट होती है और उसमें विचार प्रधान होता है जबकि कविता की भाषा सामान्यतः संकेतात्मक होती है। हम कह सकते हैं कि कविता जीवन-अनुभवों की कलात्मक अभिव्यक्ति है। वह मनुष्य के भावजगत का विस्तार करती है, उसकी कल्पनाशक्ति को जगाती है और सौंदर्यबोध का विकास करती है।

सभी काल की कविताओं को एक ही पद्धति से नहीं पढ़ाया जा सकता। मध्यकालीन कविताओं में अलंकार, छंद विधान, तुक आदि के प्रति विशेष आग्रह रहा है जबकि आज की कविता में लय और प्रवाह का महत्व है, परंपरागत छंद और तुक आदि का नहीं। शिक्षकों को यह भी ध्यान में रखना होगा कि कवि की काव्य-संवेदना के निर्माण में उसके युग और परिवेश का हाथ होता है, इसलिए कविता पढ़ाते समय कवि की युग-चेतना का बोध और अपने समय के प्रति सजगता दोनों आवश्यक हैं। तभी आज के समय में उस कविता की प्रासंगिकता को ठीक से समझा जा सकता है। संभव हो तो कविताओं की संगीतात्मक प्रस्तुति के ऑडियो-वीडियो उपलब्ध हों तो उसे भी सुनवाएँ। समय-समय पर शैक्षणिक भ्रमण और यात्राओं का आयोजन भी किया जाना चाहिए।

गद्य विधाओं की भी अपनी विशेष संरचना होती है और प्रत्येक विधा को पढ़ने-पढ़ाने की विशिष्ट विधियाँ होती हैं। किसी विधा विशेष की रचना पढ़ाते समय उसकी मूल विशेषता की ओर अवश्य ध्यान देना चाहिए। उदाहरण के लिए निबंध शिक्षण में अर्थ-ग्रहण की योग्यता विकसित करना और भाषा के



अभिव्यक्ति कौशल से विद्यार्थियों को परिचित कराना अपेक्षित है। निबंध में लेखक के दृष्टिकोण का और उसकी भाषा-शैली का विशेष महत्व होता है। उसी प्रकार विद्यार्थियों की कल्पना, उत्सुकता एवं जिज्ञासा के विस्तार के लिए कहानी पढ़ाई जाती है। हम सभी जानते हैं कि एक कहानी में कई कहानियाँ छिपी रहती हैं। शिक्षकों को ऐसे मोड़ों या बिंदुओं को खोजना होगा जहाँ से कहानी किसी भी दिशा में जा सकती है। ऐसी स्थिति से आगे की कल्पना करने (लिखित या मौखिक) के लिए विद्यार्थियों को कहा जा सकता है। साथ ही कहानी के अंतर्गत कई दृश्य-चित्र एवं शिक्षण बिंदु होते हैं। शिक्षकों को इन दृश्य-चित्रों एवं शिक्षण बिंदुओं का अभ्यास-कार्य द्वारा या किसी अन्य विधि से रचनात्मक उपयोग करना चाहिए, तभी कहानी वस्तु एवं शिल्प दोनों रूपों में विद्यार्थियों के ज्ञान का हिस्सा बन पाएगी। कहानी शिक्षण के दौरान शिक्षक प्रायोगिक रूप से कहानी को नाटक में परिवर्तित करने की प्रक्रिया का प्रारंभ भी कर सकते हैं। निबंध, यात्रा-वृत्तांत और साक्षात्कार द्वारा युग विशेष की परिस्थितियों के आकलन के साथ-साथ वैयक्तिक गुणों, क्षमताओं और अनुकूल या प्रतिकूल स्थितियों की चर्चा इस तरह की जाए कि विद्यार्थियों को उनके व्यक्तित्व के विकास में सहायता मिल सके। नाटक या एकांकी को पढ़ते-पढ़ाते समय पठन के साथ-साथ उसके मंचन की ओर भी ध्यान देना चाहिए। इससे विद्यार्थियों को एकांकी में निहित सामाजिक या अन्य परिस्थितियों तथा पात्रों की मनःस्थिति को स्वयं अनुभव करने का अवसर मिलता है। यह प्रक्रिया उन्हें सजग और संवेदनशील मनुष्य बनने की ओर अग्रसर करती है। इस प्रकार विभिन्न साहित्यिक विधाओं के लक्षणों और विशेषताओं को जानकर उनके अध्ययन-अध्यापन को सुगम बनाया जा सकता है।

शिक्षा की दुनिया में प्रायः यह कहा जाता है कि भाषा की कक्षाएँ रोचक और चुनौती भरी नहीं होतीं। आज इस मानसिकता को बदलना आवश्यक है। यह पुस्तक इस ओर एक छोटा-सा प्रयास है। इस पुस्तक को बनाते समय यह कोशिश की गई है कि भाषा की कक्षा विशेषकर 'हिंदी की घंटी' आनंददायी हो और विद्यार्थियों के मानसिक बोझ को हलका करने वाली भी। यहाँ यह भी सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया है कि शिक्षा रटने पर आधारित पद्धतियों का त्याग करे।

इस संकलन की रचनाएँ जहाँ एक ओर विद्यार्थियों में साहित्यिक संवेदना पैदा करने वाली हैं तो दूसरी ओर उन्हें जीवन के विविध संदर्भों से भी जोड़ती हैं। इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखा गया है कि विद्यार्थी साहित्य की विविध विधाओं से परिचित हो सकें। वे एक ओर साहित्य की समृद्ध परंपरा की पहचान के लिए **मध्यकालीन कविता** का आस्वाद लें और आज के जीवन को जानने के लिए **आधुनिक कविता** का भी बोध प्राप्त करें। भक्तिकाल की व्यापक जनचेतना को रैदास और तुलसीदास की कविताओं तथा स्वतंत्रता आंदोलन, प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता और मानवीय गरिमा को महत्व देने के लिए हिंदी कविता के विभिन्न कालों का प्रतिनिधित्व करने वाले तीन अन्य कवियों की कविताओं को यहाँ संकलित किया गया है। प्रयास यह किया गया है कि हिंदी कविता की समृद्धि और शक्ति की एक झलक हमारे किशोर विद्यार्थियों को मिल सके। इस पाठ्यपुस्तक में लगभग चौदह रचनाकारों की रचनाएँ सम्मिलित हैं जिनमें सात गद्य रचनाएँ और पाँच कवियों की कविताएँ हैं। इसके साथ ही अतिरिक्त पठन



के रूप में ‘साथ-साथ पढ़ें’ के अंतर्गत एक गद्य रचना और एक कविता भी दी गई है। अतिरिक्त पठन के लिए दी गई ये रचनाएँ विविध विषय केंद्रित हैं— पहली वीरगाथा है और दूसरी प्रकृति से संबंधित कविता है। **कविताओं की प्रस्तुति में ऐतिहासिक कालक्रम को ध्यान में रखा गया है।** उद्देश्य यह रहा है कि मध्यकाल और आधुनिक काल की विभिन्न प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करने वाले कवियों की कविताओं के माध्यम से विद्यार्थी हिंदी कविता की विकास-यात्रा से परिचित हो सकें।

गद्य विधाओं के चयन में यह प्रयास रहा है कि विद्यार्थी अधिक से अधिक विधाओं और विविध गद्य शैलियों का आस्वादन कर सकें। कहानी, यात्रा-वृत्तांत, निबंध, साक्षात्कार, एकांकी आदि विधाओं की कुल सात गद्य रचनाएँ पुस्तक में रखी गई हैं। पुस्तक तैयार करते समय इस बात का भी ध्यान रखा गया है कि रचनाएँ जीवन की बृहत्तर परिधि से जुड़ी हुई हों। वे एक ओर तो साहित्यिक विधाओं का प्रतिनिधित्व कर रही हों तथा दूसरी ओर समाज के विभिन्न वर्गों का भी। हम साहित्य की प्रभावकारी क्षमता का उपयोग करते हुए सभी प्रकार की विविधताओं के प्रति सकारात्मक और संवेदनशील रवैये का विकास कर सकें। भारतीय समाज के बहुभाषिक परिवेश को भी ध्यान में रखा गया है। आशा है कि संकलित रचनाएँ विद्यार्थियों को रुचिकर लगेंगी और उन्हें अन्य रचनाएँ पढ़ने के लिए प्रेरित करेंगी।

अभ्यास-प्रश्नों और आकलन की दृष्टि से इस पुस्तक की एक प्रमुख विशेषता है उसका नया **प्रस्तुतीकरण**। यह नया प्रस्तुतीकरण अभ्यास-प्रश्नों के माध्यम से किया गया है। पाठ्यपुस्तक में रचनाएँ एक वातावरण निर्मित करती हैं और अभ्यास-प्रश्न उन रचनाओं को परखने और पाठ से गहराई से जुड़ने का अवसर देते हैं। वे विद्यार्थियों को स्वतंत्र और मौलिक रूप से सोचने की प्रेरणा भी देते हैं, इसलिए इस पुस्तक में संदर्भ को फैलाने वाले, कल्पना को विस्तार देने वाले और वैज्ञानिक सोच विकसित करने वाले प्रश्न पूछे गए हैं। पुस्तक में दी गई रचनाओं को समझ के साथ पढ़ने, उन पर तार्किक, रचनात्मक और विश्लेषणात्मक समझ के साथ विचार करने की दृष्टि से अभ्यास-प्रश्नों में विविधता का ध्यान रखा गया है। यह भी ध्यान रखा गया है कि अलग-अलग रुचियों और क्षमताओं के रूप में स्वयं को व्यक्त करने वाले विद्यार्थियों को सीखने के अवसर मिलें। अभ्यास-प्रश्नों की प्रकृति इस प्रकार की है कि हर परिवेश, भाषा और सामाजिक स्तर के विद्यार्थी समाहित हो सकें और उनको चिंतन करके प्रश्नों का उत्तर देने का अवसर मिले। साथ ही यह ध्यान रखा गया है कि वे विशेष शोधपरक दृष्टि से पाठ्यक्रम से परे भी अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित हों (4.43, *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*)।

अभ्यास-प्रश्नों को मुख्य रूप से आठ शीर्षकों में बाँटा गया है— रचना से संवाद, विधा से संवाद, विषयों से संवाद, सृजन, भाषा से संवाद, गतिविधियाँ, झरोखे से और खोजबीन।

रचना से संवाद के अंतर्गत रचना से सीधे जुड़े बहुविकल्पीय प्रश्न तथा अनुभव और विचार संबंधी प्रश्नों को समाहित किया गया है। अपेक्षा यह है कि विद्यार्थी को व्यक्तिगत अनुभव और विचार के साथ-साथ सामूहिक अनुभव को प्रस्तुत करने का अवसर मिले।



विधा से संवाद के अंतर्गत रचना की विधा से संबंधित ऐसे अभ्यास-प्रश्न दिए गए हैं जिनके माध्यम से साहित्य की विविध विधाओं की विशेषताओं, उनकी परतों और सौंदर्य से विद्यार्थी न केवल परिचित हों, बल्कि स्वयं उनकी पड़ताल भी कर सकें।

विषयों से संवाद के अंतर्गत साहित्य के अंतरविषयी संबंध से जुड़े प्रश्न दिए गए हैं। साहित्य के अंतर्गत समाज विज्ञान, विज्ञान, कला, कानून, अर्थशास्त्र, प्रकृति-पर्यावरण इत्यादि सभी विषय समाहित होते हैं। साहित्य बहुत से विषयों को समाहित करते हुए निर्मित होता है, लेकिन अंततः वह साहित्य होता है। इसलिए भाषा-साहित्य को पढ़ते हुए उसकी परिधि और व्यापकता में बहुत से अन्य विषयों पर ध्यान दिलाने का प्रयास किया गया है।

सृजन शीर्षक के अंतर्गत साहित्य में लेखन, कला, खेल, कल्पना, चिंतन और स्वयं करके सीखने से संबंधित गतिविधियाँ दी गई हैं जिससे कल्पना और सृजन को विस्तार मिलेगा।

भाषा से संवाद शीर्षक के अंतर्गत पाठों में आए भाषिक संदर्भों (व्याकरण) को आधार बनाते हुए उनके विश्लेषण संबंधी प्रश्नों को समाहित किया गया है। उपसर्ग, प्रत्यय, समास, विशेषण, क्रिया, क्रिया विशेषण, वाक्य विवेचन या बहुभाषिक स्वरूप को जीवंत अनुभवों से जोड़कर प्रस्तुत किया गया है।

गतिविधियाँ शीर्षक के अंतर्गत पाठ से जोड़ते हुए ऐसी गतिविधियाँ दी गई हैं जिनसे विद्यार्थियों को अन्य साहित्यिक विधाओं, पत्र, विज्ञापन आदि लिखने का अवसर तो मिले ही, उनकी कल्पना और रचनात्मकता भी समृद्ध हो सके। इन्हें 'विद्यालय में कक्षा के अतिरिक्त' भी किया जा सके।

झरोखे से के अंतर्गत पाठ के संदर्भ को ध्यान में रखते हुए कुछ ऐसी रचनाएँ दी गई हैं जो पाठ के प्रति विद्यार्थियों की रुचि और समझ को और अधिक विस्तार दे सकेंगी। ये रचनाएँ ऐसे झरोखे हैं जिनसे झाँककर विद्यार्थी साहित्य की विशाल दुनिया का आनंद उठा सकेंगे। दूसरी ओर, इन झरोखों के माध्यम से साहित्य तथा सृजन के विविध स्वरूपों से जुड़ सकेंगे।

खोजबीन के अंतर्गत पाठों से जुड़ी कुछ सामग्री (ऑडियो, वीडियो या प्रिंट के रूप में) के लिंक खोजबीन के लिए दिए गए हैं ताकि विद्यार्थियों के पठन का विस्तार हो सके और साथ ही रचनाओं के प्रति उनकी समझ समृद्ध हो।

इस पुस्तक में '**भाषा संगम**' शीर्षक से दो प्रकार की प्रस्तुतियाँ दिखाई पड़ेंगी। एक, पुस्तक के प्रारंभ में भारतीय भाषाओं में से किसी एक भारतीय भाषा की रचना, जैसे इसमें गुजराती भाषा की 'वैष्णव जन तो तेने कहिए' रचना दी गई है। दूसरे, रचना में आए किसी एक केंद्रीय शब्द को भारतीय भाषाओं में अनुवाद के रूप में दिया गया है। अपेक्षा यह है कि इसके माध्यम से विद्यार्थियों का अन्य भारतीय भाषाओं के प्रति तो झुकाव होगा ही, इसके साथ-साथ बहुत-सी भारतीय भाषाओं को एक साथ रखकर उनकी समानता, सौंदर्य और विशेषता पर कक्षा में विचार करने का अवसर मिलेगा।

अभ्यास-प्रश्नों में जगह-जगह भारतीय भाषाओं से संबंधित गतिविधियाँ भी दी गई हैं।



पुस्तक को रुचिकर और पठनीय बनाने में चित्रों की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इस बात को ध्यान में रखते हुए लेखकों के परिचय के साथ उनके चित्र भी दिए गए हैं। रचनाओं से जुड़े कुछ चित्र भी पुस्तक में सम्मिलित किए गए हैं। ये चित्र रचना की व्याख्या करते हुए उन्हें समझने में सहायता तो करते ही हैं, उन्हें विस्तार भी देते हैं।

आशा है, विद्यार्थी इस पुस्तक को बिना बोझ का अनुभव किए आनंद के साथ पढ़ेंगे और हिंदी भाषा तथा हिंदी साहित्य के साथ-साथ व्यापक सामाजिक जीवन की चेतना प्राप्त करेंगे।

संध्या सिंह

प्रोफेसर, भाषा शिक्षा विभाग एवं

संयोजक, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह, हिंदी

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम एवं शिक्षण-अधिगम सामग्री समिति (एन.एस.टी.सी.)

महेश चंद्र पंत, कुलाधिपति, राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान (अध्यक्ष)

मञ्जुल भार्गव, प्रोफेसर, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी (सह-अध्यक्ष)

सुधा मूर्ति, प्रतिष्ठित लेखिका एवं शिक्षाविद

शेखर मांडे, पूर्व महानिदेशक, सी.एस.आई.आर. एवं प्रतिष्ठित प्रोफेसर, सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे

सुजाता रामदोरई, प्रोफेसर, ब्रिटिश कोलंबिया यूनिवर्सिटी, कनाडा

शंकर महादेवन, संगीत विशेषज्ञ, मुंबई

यू. विमल कुमार, निदेशक, प्रकाश पादुकोण बैडमिंटन अकादमी, बेंगलुरु

सुरीना राजन, आई.ए.एस. (सेवानिवृत्त), हरियाणा एवं पूर्व महानिदेशक, एच.आई.पी.ए.

चमू कृष्ण शास्त्री, अध्यक्ष, भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय

संजीव सान्याल, सदस्य, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् (ई.ए.सी.-पी.एम.)

गजानन लोंढे, प्रमुख, कार्यक्रम कार्यालय, एन.एस.टी.सी.

रेबिन छेत्री, निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी., सिक्किम

प्रत्यूष कुमार मंडल, प्रोफेसर एवं संकायाध्यक्ष (अनुदेश), क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूरु

दिनेश कुमार, प्रोफेसर एवं संकायाध्यक्ष (अनुसंधान), रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

कीर्ति कपूर, पूर्व प्रोफेसर, भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

रंजना अरोड़ा, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(सदस्य-सचिव)



भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक ¹[संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय,
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की स्वतंत्रता,
प्रतिष्ठा और अवसर की समता

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और ²[राष्ट्र की एकता

और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली बंधुता

बढ़ाने के लिए

दृढसंकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को एतद्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य" के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "राष्ट्र की एकता" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष

सुरेंद्र दुबे, उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

सदस्य

अंजनी श्रीवास्तव, एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी

अक्षय कुमार दीक्षित, टी.जी.टी. (हिंदी), आचार्य तुलसी सर्वोदय बाल विद्यालय, छतरपुर, नई दिल्ली

अनुराधा, पी.जी.टी. (हिंदी) (अवकाश प्राप्त), सरदार पटेल विद्यालय, नई दिल्ली

चमन लाल गुप्त, प्रोफेसर एवं पूर्व विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

नंद किशोर पांडेय, कुलपति, हरिदेव जोशी पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय, जयपुर

नीलकंठ कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर, भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

प्रणय कुमार, विभागाध्यक्ष, हिंदी एवं संस्कृत विभाग, एल.के. सिंघानिया एजुकेशन सेंटर, गोटन

मीनू सिंह, पी.जी.टी. (हिंदी), सर्वोदय कन्या विद्यालय, रजोकरी, नई दिल्ली

राजीव रंजन सिन्हा, पी.जी.टी. (हिंदी), सर्वोदय सह-शिक्षा विद्यालय, मेहराम नगर, नई दिल्ली

लक्ष्मी प्रसाद मालगुडी, पी.जी.टी. (हिंदी), राजकीय इंटर कॉलेज, कोटी कॉलोनी, कलसी ब्लॉक, देहरादून

विवेकानंद उपाध्याय, असिस्टेंट प्रोफेसर, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी

शारदा कुमारी, प्राचार्य (अवकाश प्राप्त), डी.आई.ई.टी., आर.के. पुरम, सेक्टर-7, नई दिल्ली

संजय कुमार श्रीवास्तव, पी.जी.टी. (हिंदी), महात्मा गाँधी इंटर कॉलेज, गोरखपुर

साकेत बहुगुणा, असिस्टेंट प्रोफेसर (भाषाविज्ञान), केंद्रीय हिंदी संस्थान (दिल्ली केंद्र), नई दिल्ली

सुमन कुमार सिंह, प्रधानाध्यापक, गवर्मेन्ट सेकेंडरी स्कूल, कौड़िया वसंती, भगवानपुर हाट, सिवान

सदस्य-समन्वयक

संध्या सिंह, प्रोफेसर, भाषा शिक्षा विभाग एवं संयोजक, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह (हिंदी भाषा उप-समूह), रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

सदस्य सह-समन्वयक

नरेश कोहली, एसोसिएट प्रोफेसर, भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली



भारत का संविधान

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य - भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह -

- (क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;
- (ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;
- (ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे;
- (घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;
- (ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों;
- (च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;
- (छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;
- (ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;
- (झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;
- (ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके; और
- (ट) यदि माता-पिता या संरक्षक हैं, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य को शिक्षा के अवसर प्रदान करे।



आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा पर्यवेक्षण समिति के अध्यक्ष एवं सदस्यों; पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह (भाषा) के सभी सदस्यों तथा अन्य अंतःसंबंधी विषयों के लिए गठित पाठ्यचर्या क्षेत्र समूहों के अध्यक्षों एवं सदस्यों के प्रति इस पुस्तक के निर्माण की प्रक्रिया में मार्गदर्शन एवं समीक्षा हेतु बहुमूल्य योगदान के लिए आभार व्यक्त करती है।

परिषद्, संयुक्त निदेशक, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान; अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग; अध्यक्ष, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग; अध्यक्ष, शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग; अध्यक्ष, विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग; अध्यक्ष, जेंडर अध्ययन विभाग; अध्यक्ष, कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग के साथ ही इन विभागों के सदस्यों का पाठ्यपुस्तक में अंतरानुशासनिक विषयों के अंतःसंबंध को सुनिश्चित करने के लिए आभार व्यक्त करती है।

इस पुस्तक में जिन रचनाओं को सम्मिलित किया गया है, उनकी स्वीकृति देने के लिए सभी रचनाकारों, उनके परिजनों एवं उनसे संबद्ध प्रकाशकों के प्रति परिषद् अपना आभार व्यक्त करती है।

इस पाठ्यपुस्तक में योगदान के लिए श्याम सिंह सुशील, लेखक, दिल्ली के प्रति परिषद् विशेष आभार प्रकट करती है।

परिषद्, वरिष्ठ शोध सहायक— सुनीत मिश्र; कनिष्ठ परियोजना अध्येता— प्रिया, सत्यम सिंह, अरुण कुमार, सोनम सिंह तथा राहुल कुमार यादव; और तकनीकी सहयोग हेतु फरहीन फातिमा, डी.टी.पी. ऑपरेटर का हार्दिक आभार व्यक्त करती है।

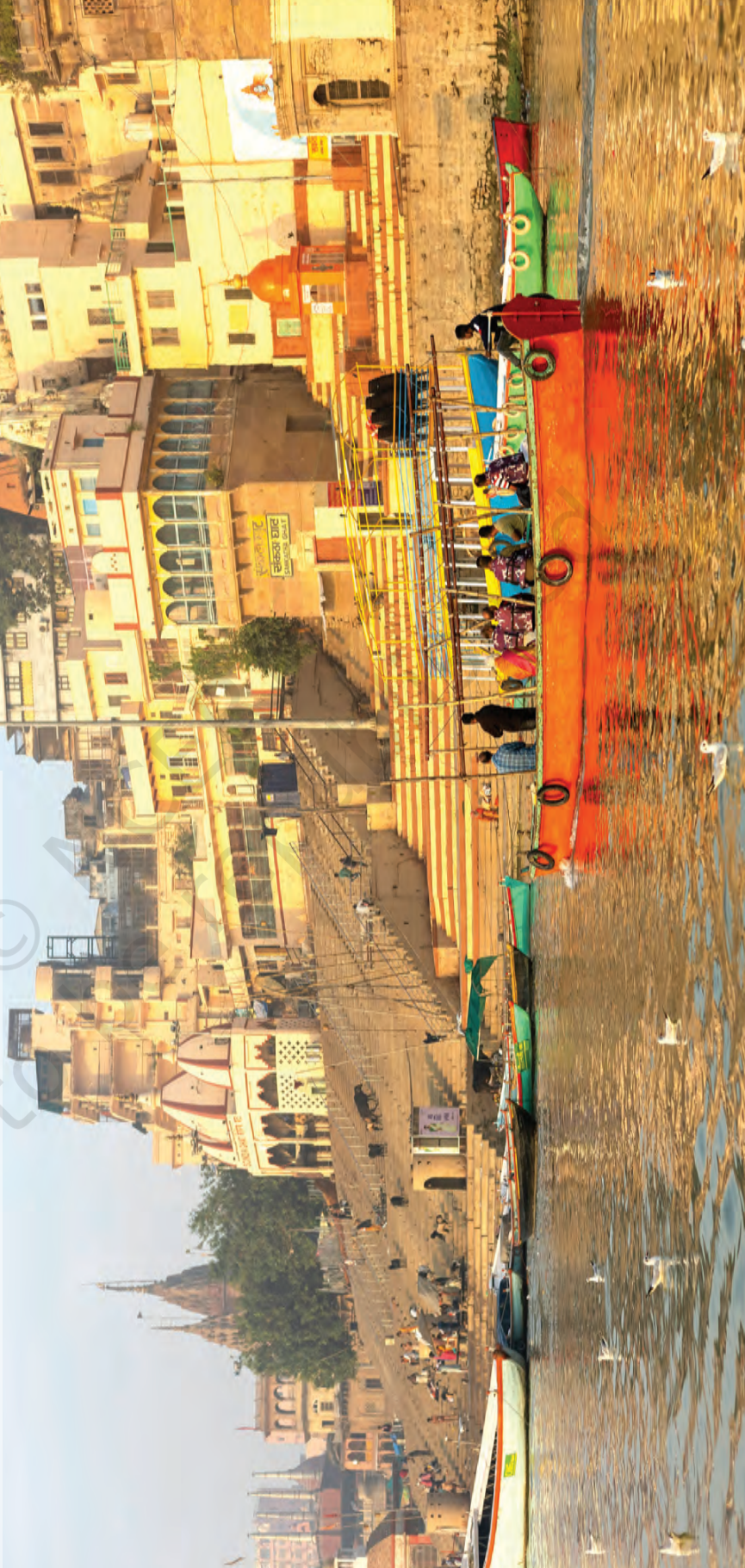
परिषद्, इस पुस्तक के संपादन के लिए प्रकाशन प्रभाग में कार्यरत अतुल मिश्रा, संपादक (संविदा); अब्दुल मजीद, प्रूफरीडर (संविदा) के प्रति तथा इस पुस्तक को प्रकाशन हेतु अंतिम रूप से तैयार करने के लिए पवन कुमार बरियार, प्रभारी, डी.टी.पी. प्रकोष्ठ; विवेक राजपूत, उपासना, अनिता कुमारी और मनोज कुमार, डी.टी.पी. ऑपरेटर (संविदा) के प्रति भी आभार व्यक्त करती है।

not



बंगाल

भारत की प्रमुख नदियों में गंगा, हमारी सभ्यता व संस्कृति का अविलग्न प्रवाह है। गंगोत्री से निकलकर इसकी धारा गंगासागर (बंगाल की खाड़ी) तक जाती है। इस तरह गंगा भारत के बड़े भौगोलिक क्षेत्र की जीवन रेखा है। गंगा की तरह हिंदी भी हमारी सभ्यता व संस्कृति की एक पहचान है। हिंदी भारत के व्यापक क्षेत्र में बोली, समझी व पढ़ी जाती है। गंगा पाठ्यपुस्तक भी न केवल विद्यार्थियों की भाषाई दक्षता विकसित करती है बल्कि उन्हें भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों के सतत प्रवाह से भी जोड़ती है।



विषय-क्रम



आमुख

iii

यह पुस्तक

v

भाषा संगम— वैष्णव जन तो तेने कहिए...

xviii

काव्य खंड

8. पद	रैदास	145
9. राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद	तुलसीदास	153
10. भारति, जय, विजयकरे!	सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	166
11. झाँसी की रानी	सुभद्रा कुमारी चौहान	176
12. घर की याद	भवानीप्रसाद मिश्र	194
तब याद तुम्हारी आती है (साथ-साथ पढ़ें)	रामनरेश त्रिपाठी	206



भाषा संगम

वैष्णव जन तो तेने कहिए...

वैष्णव जन तो तेने कहिए,
जे पीड़ पराई जाणे रे।
परदुःखे उपकार करे तोये,
मन अभिमान न आणे रे।
सकल लोकमां सहने वंदे,
निंदा न करे केनी रे।
वाच काछ मन निश्चल राखे,
धन-धन जननी तेनी रे।
समदृष्टी ने तृष्णा त्यागी,
परस्त्री जेने मात रे।
जिह्वा थकी असत्य न बोले,
परधन नव झाले हाथ रे।
मोह माया व्यापे नहीं जेने,
दृढ़ वैराग्य जेना मनमां रे।
रामनामशुं ताली लागी,
सकल तीरथ तेना तनमां रे।
वणलोभी ने कपटरहित छे,
काम क्रोध निवार्या रे।
भणे नरसैयो तेनुं दरसन करतां,
कुल एकतेर तार्या रे।

— नरसी मेहता

(गुजराती भाषा के प्रसिद्ध कवि)



काव्य खंड

© NCEPT
not to be republished

समूचे जनसमूह में भाषा और भाव की एकता और
सौहार्द का होना अच्छा है।

—हजारीप्रसाद द्विवेदी

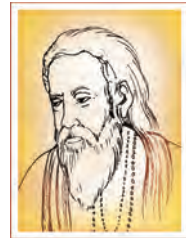
कुछ लिख के सो कुछ पढ़ के सो
तू जिस जगह जागा सबेरे
उस जगह से बढ़ के सो!

—भवानीप्रसाद मिश्र



0901CH08

रैदास



रैदास नाम से विख्यात संत रविदास का जन्म काशी (वाराणसी) में हुआ। उनका जीवन-काल 15वीं शताब्दी (सन् 1388–1518)* माना जाता है। रैदास संत कवियों में गिने जाते हैं। उन्होंने बाह्य आडंबरों का खंडन कर मन की शुद्धता और आंतरिक भक्ति को ही सच्चा धर्म माना है।

रैदास ने अपनी काव्य-रचनाओं में सरल, व्यावहारिक ब्रजभाषा का प्रयोग किया है, जिसमें अवधी, राजस्थानी, खड़ी बोली और उर्दू-फारसी के शब्दों का भी मिश्रण है। उनकी सरल ब्रज भाषा में लिखी भक्ति रचनाएँ आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में शामिल हैं और वे आज भी समानता, प्रेम और भाईचारे का संदेश देती हैं। उनकी रचनाएँ रैदास बानी में संकलित हैं।



यहाँ रैदास के दो पद लिए गए हैं। पहले पद में बताया गया है कि जैसे चंदन-पानी, दीपक-बाती, मोती-धागा और बादल-मोर का संबंध अटूट होता है, वैसे ही भक्त से उसके आराध्य अलग नहीं हो सकते। इस पद में अनन्य भक्ति और आराध्य के प्रति समर्पण का भाव प्रकट होता है।

दूसरे पद में भी आराध्य से भक्त का अटूट नाता व्यक्त किया गया है। वह तीर्थ और व्रत छोड़ सकता है, पर प्रभु-चरणों की भक्ति नहीं। यह पद निष्ठा, विश्वास और अडिग भक्ति को व्यंजित करता है।

*संदर्भ- हिंदी साहित्य कोश (भाग-2), नामवाची शब्दावली, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी





पद*

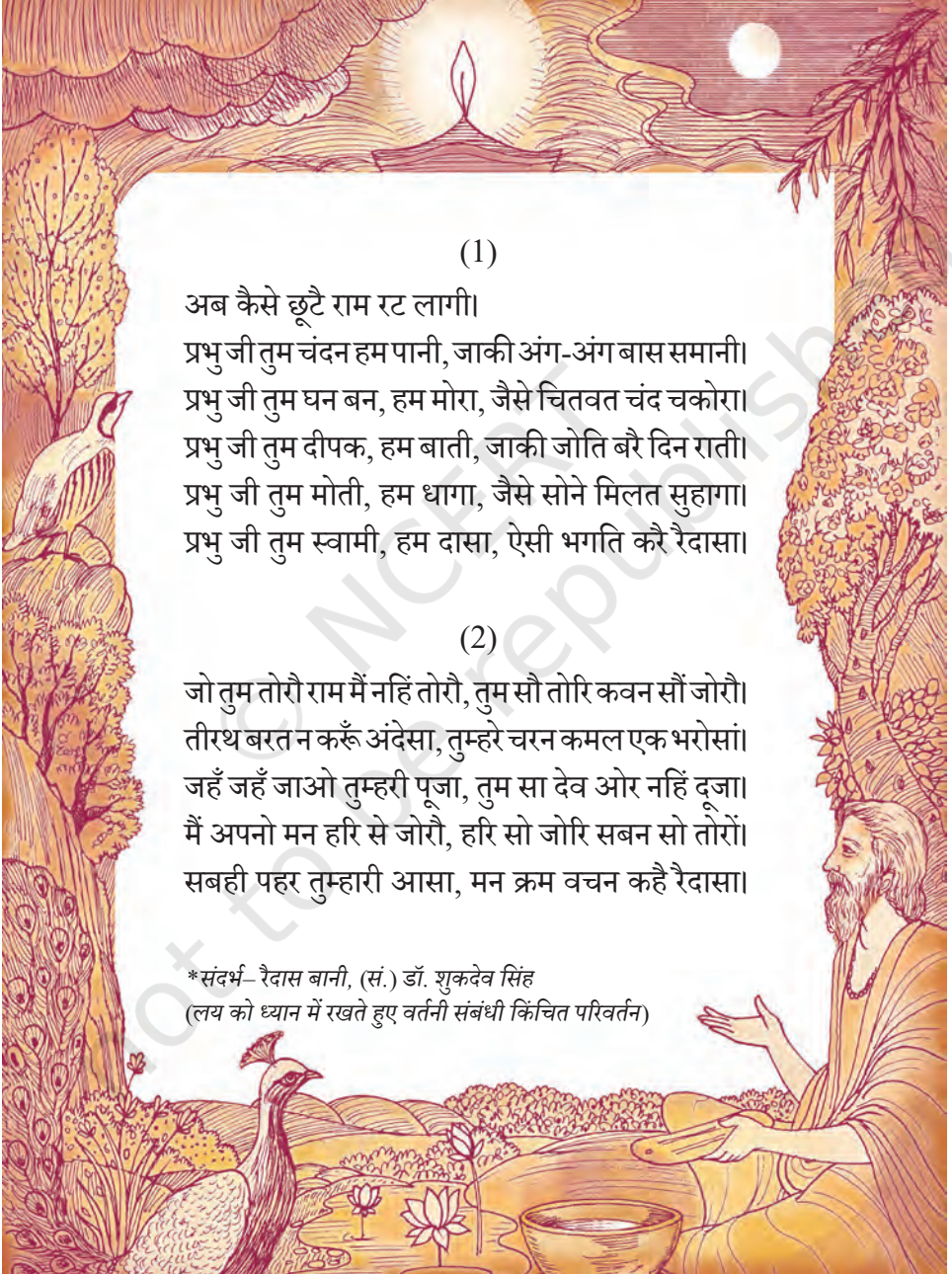
(1)

अब कैसे छूटै राम रट लागी।
प्रभु जी तुम चंदन हम पानी, जाकी अंग-अंग बास समानी।
प्रभु जी तुम घन बन, हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।
प्रभु जी तुम दीपक, हम बाती, जाकी जोति बैर दिन राती।
प्रभु जी तुम मोती, हम धागा, जैसे सोने मिलत सुहागा।
प्रभु जी तुम स्वामी, हम दासा, ऐसी भगति करै रैदासा।

(2)

जो तुम तोरौ राम मैं नहिं तोरौ, तुम सौ तोरि कवन सौं जोरौ।
तीरथ बरतन करूँ अंदेसा, तुम्हरे चरन कमल एक भरोसा।
जहँ जहँ जाओ तुम्हरी पूजा, तुम सा देव ओर नहिं दूजा।
मैं अपनो मन हरि से जोरौ, हरि सो जोरि सबन सो तोरौ।
सबही पहर तुम्हारी आसा, मन क्रम वचन कहै रैदासा।

*संदर्भ- रैदास बानी, (सं.) डॉ. शुकदेव सिंह
(लय को ध्यान में रखते हुए वर्तनी संबंधी किंचित परिवर्तन)



अभ्यास



रचना से संवाद

मेरे उत्तर मेरे तर्क

निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

- “अब कैसे छूटै राम रट लागी” पंक्ति का भाव है?
 - नाम उच्चारण की कठिनाई
 - नाम रटकर याद करना
 - आराध्य का नाम जपना
 - मित्रों का नाम रटना
- “प्रभु जी तुम चंदन हम पानी” पंक्ति में आराध्य और भक्त का संबंध किस रूप में व्यक्त हुआ है?
 - एकाकार और समरूप
 - तरल और तीव्र सुगंध
 - आश्रय और आश्रित
 - द्रव और ठोस
- “तुम दीपक, हम बाती” से रैदास का क्या भाव है?
 - दीपक और बाती का कोई मेल नहीं होता है।
 - दीपक बिना बाती भी जल सकता है।
 - भक्त आराध्य से अधिक महत्वपूर्ण है।
 - भक्त का आराध्य से मेल जीवन को आलोकित करता है।
- “जो तुम तोरौ राम मैं नहिं तोरौ” पंक्ति में रैदास का क्या आशय है?
 - परोपकारी भक्ति भाव
 - आराध्य से अटूट संबंध
 - सांसारिक मोह
 - कर्मकांड पर बल
- “तीरथ बरत न करूँ अंदेसा” पंक्ति से आप क्या समझते हैं?
 - तीर्थ और व्रत आवश्यक नहीं हैं।
 - तीर्थ और व्रत सब आवश्यक हैं।





- (ग) तीर्थ जाने से मुक्ति निश्चित है।
 (घ) आराध्य के चरणों में सच्चा आश्रय है।
 6. सर्वव्यापक ईश्वर की अवधारणा किस पंक्ति में व्यक्त होती है?
 (क) “जहाँ जहाँ जाओ तुम्हरी पूजा”
 (ख) “जाकी जोति बरै दिन राती”
 (ग) “तुम दीपक, हम बाती”
 (घ) “तीरथ बरत न करूँ अंदेसा”

अर्थ और भाव

नीचे दी गई पंक्तियों का अर्थ समझाते हुए भाव स्पष्ट कीजिए।

- (क) “प्रभु जी तुम घन बन, हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।”
 (ख) “तीरथ बरत न करूँ अंदेसा, तुम्हरे चरन कमल एक भरोसा।”

मेरी समझ मेरे विचार

नीचे दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा कीजिए और उनके उत्तर लिखिए—

1. “जो तुम तोरौ राम मैं नहिं तोरौ” पंक्ति में रैदास की अपने आराध्य में अटूट निष्ठा का भाव है। इससे आप क्या समझते हैं? विस्तार से लिखिए।
2. रैदास ने तीर्थ और व्रत के स्थान पर किस साधन को भक्ति का प्रमुख आधार माना है? आपके विचार से भक्ति के क्या आधार हो सकते हैं?
3. दोनों पदों में भक्त और आराध्य के संबंध को किन-किन प्रतीकों/उपमाओं से व्यक्त किया गया है? लिखिए।



विधा से संवाद

कविता का सौंदर्य

- “प्रभु जी तुम घन बन, हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।”

उपर्युक्त पंक्ति के रेखांकित अंश पर ध्यान दीजिए। इसमें अनुप्रास अलंकार का प्रयोग किया गया है। जिस रचना में व्यंजन वर्णों की आवृत्ति एक से अधिक बार होती है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।



- “प्रभु जी तुम मोती, हम धागा, जैसे सोने मिलत सुहागा।”

उपर्युक्त रेखांकित अंश में उपमा अलंकार है। किसी प्रसिद्ध वस्तु की समानता के आधार पर जब किसी वस्तु या व्यक्ति के रूप, गुण, धर्म का वर्णन किया जाता है तो वहाँ उपमा अलंकार होता है।

- “तीरथ बरत न करूँ अदेसा, तुम्हरे चरन कमल एक भरोसा।”

उपर्युक्त रेखांकित अंश में रूपक अलंकार है। रूपक अलंकार वहाँ होता है जहाँ रूप और गुण की अत्यधिक समानता के कारण उपमेय में उपमान का आरोप कर अभेद स्थापित किया जाए।

अब आप अपनी पाठ्यपुस्तक में सम्मिलित कविताओं में अनुप्रास, उपमा और रूपक अलंकार वाली अन्य पंक्तियों को ढूँढ़कर लिखिए।

कविता की कुछ अन्य विशेषताएँ

नीचे दी गई सूची को ध्यान से देखिए। इस सूची में रैदास के दोनों पदों से कुछ विशेषताएँ चुनकर दी गई हैं। पदों में से चुनकर इन विशेषताओं को दर्शाती पंक्तियाँ लिखिए। उदाहरण के लिए पहली विशेषता के सामने पंक्ति दी गई है।

विशेषताएँ	उदाहरण
अनन्य भक्ति भाव	“जो तुम तोरौ राम मैं नहिं तोरौ, तुम सौ तोरि कवन सौं जोरौ।”
सरल और लोकधर्मी भाषा	
उपमा और तुलना	
लयात्मकता और गेयता/ध्वन्यात्मकता	
दृढ़ निष्ठा और आस्था	



विषयों से संवाद

1. तीर्थ और व्रत के स्थान पर रैदास ने आराध्य की भक्ति को प्रधान माना है। भक्तिकाल के कवि रैदास की तरह कबीर भी निराकार आराध्य की भक्ति पर बल देते हैं। तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों के आधार पर बताइए कि इसके क्या कारण हो सकते हैं?
(संकेत— आप अपने सामाजिक विज्ञान के शिक्षक की सहायता भी ले सकते हैं।)





2. “सोने मिलत सुहागा”

‘सुहागा’ एक प्राकृतिक खनिज है जिसके प्रयोग से सोने की अशुद्धियाँ दूर हो जाती हैं और उसकी चमक बढ़ जाती है। ‘सुहागा’ का रासायनिक नाम और उसकी विशेषताएँ अपने विज्ञान के शिक्षक से चर्चा करके लिखिए।



श्रावण से संवाद

व्याकरण की बात

शब्दों की बात

1. पठित पदों में से संज्ञा और सर्वनाम के तीन-तीन उदाहरण ढूँढ़कर लिखिए।
2. रैदास के इन दोनों पदों में बहुत से ऐसे शब्द प्रयुक्त हुए हैं जिनके स्थान पर अन्य शब्दों का प्रयोग होता है। नीचे सूची में दिए गए शब्दों को देखिए। आप या आपके आस-पास के लोग इन शब्दों के लिए किन अन्य शब्दों का प्रयोग करते हैं? लिखिए।

मोरा, चकोरा, बाती, राती, सोने, तीरथ, बरत



सृजन

1. कक्षा में समूह बनाकर इन दोनों पदों को गाकर/पाठ करके प्रस्तुत कीजिए।
2. कल्पना कीजिए कि पद में आई उपमाओं के आधार पर भक्त और आराध्य आपस में बात कर रहे हैं। इस दृश्य को आधार बनाकर संवाद-लेखन कीजिए।
3. “जो तुम तोरौ राम मैं नहीं तोरौ” पंक्ति को आधार बनाकर अटूट मित्रता पर एक लघुकथा तैयार कीजिए।



झरोखे से

आपने रैदास के पद पढ़े। अब आप रैदास की तरह ही महाराष्ट्र के संत कवि नामदेव के आगे दिए गए दो पद पढ़िए। निर्गुण संत काव्य परंपरा के संत कवि नामदेव का जन्म 13वीं-14वीं शताब्दी में महाराष्ट्र में हुआ। अन्य संत कवियों की भाँति नामदेव ने भी बाह्य आडंबरों, सामाजिक रूढ़ियों का विरोध कर सामाजिक समरसता, प्रेम एवं निराकार भक्ति से संबंधित पदों की रचना की है।



(1)

माइ न होती बापु न होता करम न होती काया।
 हम नहिं होते, तुम नहिं होते, कवन कहां ते आया।।
 राम कोइ न किसही केरा। जैसे तरवर पंखि-बसेरा।।
 चंद न होता, सूर न होता, पानी पवनु मिलाया।
 सास्त्र न होता बेद न होता, करमु कहां ते आया।।
 खेचरि भूचरि तुलसी माला गुरपरसादी पाया।
 नामा प्रणवै परम तत्त कूं सतगुर मोहि लखाया।।

(2)

मोहि लागति तालाबेली।
 बछरा बिनु गाइ अकेली।।
 पानी बिनु ज्यूं मीन तलफैं।
 ऐसे रामनाम बिनु नामा कल्पै।।
 जैसे गाइ का बाछा छूटला।
 थन चोखता माखन घूटला।।
 नामदेउ नारायन पाया।
 गुर भेटत ही अलख लखाया।।
 जैसे विषै हेत परनारी।
 ऐसे नामे प्रीति मुरारी।।
 जैसे ताप ते निरमल घामा।
 तैसे रामनाम बिनु बापुरो नामा।।

अब अपनी कक्षा में चर्चा कीजिए और बताइए कि रैदास तथा नामदेव के पदों में क्या-क्या अंतर है और क्या-क्या समानताएँ हैं?





रैदास के जीवन और पदों के विषय में पुस्तकालय और इंटरनेट से खोजकर पढ़िए। कुछ लिंक नीचे दिए गए हैं।

<https://youtu.be/zZoAghETdgl>

<https://youtu.be/0vfpBMozOXY>

शब्द-संपदा

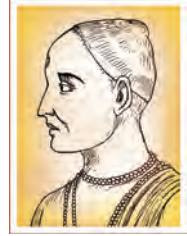
चंदन	—	एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसकी लकड़ी एक प्रधान गंधद्रव्य है, संदल, चंदन को घिसकर बनवाया हुआ लेप
बास	—	गंध, निवास, वासस्थान, वस्त्र
घन	—	बादल, मेघ, अंधकार, समूह, विस्तार
चितवत/चितवन/चितवना	—	किसी की ओर देखने का ढंग, दृष्टि, देखना, निरखना
चकोरा/चकोर	—	तीतर की जाति का एक पक्षी जो चंद्रमा का परम प्रेमी माना जाता है
जोति/ज्योति	—	प्रकाश, रोशनी, लौ, सूर्य, नक्षत्र
तीरथ/तीर्थ	—	पुण्य क्षेत्र, वह पुण्य स्थान जहाँ विशेष धर्म के अनुयायी पूजा, स्नान आदि के लिए जाते हों, जैसे- काशी, प्रयाग, मथुरा आदि
अदेसा	—	सोच, चिंता, शक, आशंका, खतरा, हानि, दुविधा





0901CH09

तुलसीदास



गोस्वामी तुलसीदास का जन्म आज के उत्तर प्रदेश में हुआ था। इनका जीवन-काल 16वीं-17वीं शताब्दी (सन् 1532-1623)* के मध्य माना गया है। *रामचरितमानस* तुलसीदास का प्रसिद्ध महाकाव्य है। *रामचरितमानस* उनकी अनन्य रामभक्ति और उनके सृजनात्मक कौशल का मनोरम उदाहरण है। उनकी अन्य प्रमुख रचनाएँ *कवितावली*, *गीतावली*, *दोहावली*, *कृष्णगीतावली*, *विनयपत्रिका*, *हनुमान बाहुक* हैं। तुलसीदास की रचनाओं में राम मानवीय मर्यादाओं और आदर्शों के प्रतीक हैं जिनके माध्यम से उन्होंने नीति, स्नेह, शील, विनय, त्याग जैसे मूल्यों को प्रतिष्ठित किया है। मानव-प्रकृति, लोकजीवन और जीवन-जगत संबंधी गहरी अंतर्दृष्टि उनके काव्य में दिखाई पड़ती है।

तुलसीदास संस्कृत के श्रेष्ठ ज्ञाता थे। उनका अवधी और ब्रज दोनों भाषाओं पर समान अधिकार था। उन्होंने *रामचरितमानस* की रचना अवधी में और *विनयपत्रिका* तथा *कवितावली* की रचना ब्रजभाषा में की। काशी में उनका देहावसान हुआ।



प्रस्तुत अंश 'रामचरितमानस' के 'बालकांड' से लिया गया है। सीता स्वयंवर में श्रीराम द्वारा शिव-धनुष भंग का समाचार जब मुनि परशुराम को मिलता है तो वे आक्रोशित होकर वहाँ आते हैं। शिव-धनुष को खंडित देखकर वे तीव्र रोष प्रकट करते हैं और सभा में उपस्थित सभी राजाओं पर क्रोधित होते हैं। यहाँ तुलसीदास ने परशुराम के रोषपूर्ण और तेजस्वी रूप का वर्णन किया है। प्रस्तुत अंश में, सभा में उपस्थित राजाओं के भय, विश्वामित्र और जनक की सभा में उपस्थिति, जनक द्वारा सीता-स्वयंवर के बारे में बताने, विश्वामित्र द्वारा राम-लक्ष्मण का परशुराम से परिचय एवं सम्मानपूर्वक अभिवादन के बाद कथा आगे बढ़ती है।

*संदर्भ- हिंदी साहित्य कोश (भाग-2), नामवाची शब्दावली, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी

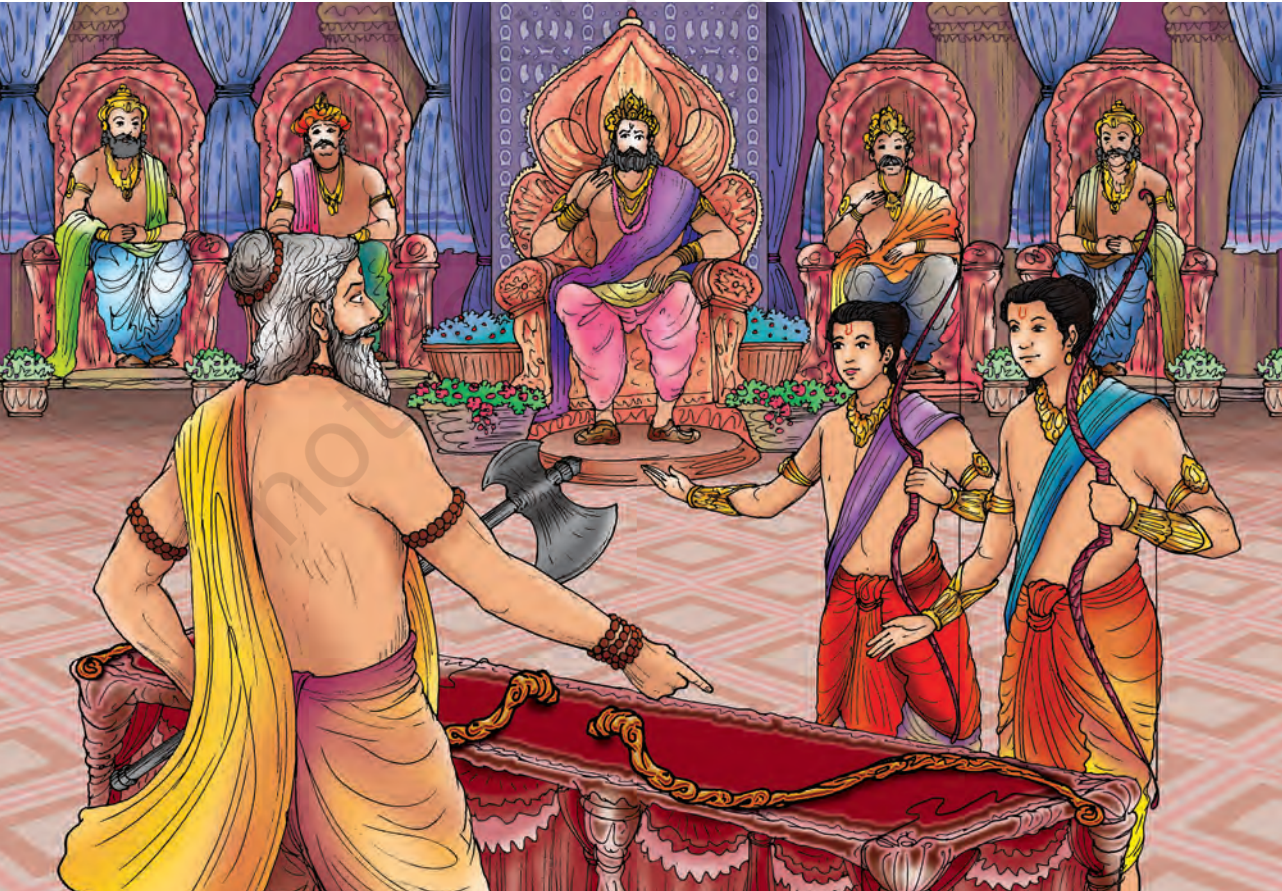




राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद

देखत भृगुपति बेषु कराला॥ उठे सकल भय बिकल भुआला॥
पितु समेत कहि कहि निज नामा॥ लगे करन सब दंड प्रनामा॥
जेहि सुभायँ चितवहिं हितु जानी॥ सो जानइ जनु आइ खुटानी॥
जनक बहोरि आइ सिरु नावा॥ सीय बोलाइ प्रनामु करावा॥
आसिष दीन्हि सखीं हरषानी॥ निज समाज लै गई सयानी॥
बिस्वामित्रु मिले पुनि आई॥ पद सरोज मेले दोउ भाई॥
रामु लखनु दसरथ के ढोटा॥ दीन्हि असीस देखि भल जोटा॥
रामहि चितइ रहे थकि लोचना रूप अपार मार मद मोचना॥

बहुरि बिलोकि बिदेह सन कहहु काह अति भीरा
पूछत जानि अजान जिमि ब्यापेउ कोपु सरीरा॥



समाचार कहि जनक सुनाए। जेहि कारन महीप सब आए॥
सुनत बचन फिरि अनत निहारे। देखे चापखंड महि डारे॥
अति रिस बोले बचन कठोरा। कहु जड़ जनक धनुष कै तोरा॥
बेगि देखाउ मूढ़ न त आजू। उलटउँ महि जहाँ लहि तव राजू॥
अति डरु उतरु देत नृपु नाहीं। कुटिल भूप हरषे मन माहीं॥
सुर मुनि नाग नगर नर नारी। सोचहिं सकल त्रास उर भारी॥
मन पछिताति सीय महतारी। बिधि अब सँवरी बात बिगारी॥
भृगुपति कर सुभाउ सुनि सीता। अरध निमेष कलप सम बीता॥

सभय बिलोके लोग सब जानि जानकी भीरु।
हृदयँ न हरषु बिषादु कछु बोले श्रीरघुबीरु॥

नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा॥
आयसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही॥
सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरि करनी करि करिअ लराई॥
सुनहु राम जेहिं सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा॥
सो बिलगाउ बिहाइ समाजा। न त मारे जैहहिं सब राजा॥
सुनि मुनि बचन लखन मुसुकाने। बोले परसुधरहि अपमाने॥
बहु धनुही तोरीं लरिकाई। कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाई॥
एहि धनु पर ममता केहि हेतू। सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतू॥

रे नृप बालक काल बस बोलत तोहि न सँभारा।
धनुही सम तिपुरारि धनु बिदित सकल संसारा॥

रामचरितमानस में यहाँ से आगे की कथा में परशुराम का आक्रोश, लक्ष्मण और परशुराम के बीच व्यंग्योक्तिपूर्ण संवाद और ऐसी स्थिति में भी राम के धीर-गंभीर शांत स्वरूप का वर्णन है। अंततः राम के विनय और विश्वामित्र के समझाने पर तथा राम की शक्ति की परीक्षा लेकर परशुराम का आक्रोश शांत होता है।

राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद आप प्रश्न-अभ्यास में 'खोजबीन' के अंतर्गत दिए गए लिंक के माध्यम से पढ़ सकते हैं।



अभ्यास



रचना से संवाद

मेरे उत्तर मेरे तर्क

निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

- “पितु समेत कहि कहि निज नामा॥ लगे करन सब दंड प्रनामा॥” यह पंक्ति सभा में उपस्थित लोगों की किस मनःस्थिति को दर्शाती है?
 - आदर और सम्मान
 - भक्ति और श्रद्धा
 - भय और शिष्टाचार
 - प्रेम और सहिष्णुता
- “जनक बहोरि आइ सिरु नावा॥ सीय बोलाइ प्रनामु करावा” पंक्ति से राजा जनक के व्यवहार की कौन-सी विशेषता उद्घाटित होती है?
 - संवेदनशीलता
 - शिष्टता
 - सहनशीलता
 - उदासीनता
- “अति रिस बोले बचन कठोरा॥” जनक के प्रति परशुराम के कठोर वचन बोलने का मूल कारण था—
 - उचित आदर-सत्कार न मिलना
 - जनक द्वारा समाचार छिपाना
 - शिव-धनुष का खंडित होना
 - अन्य राजाओं की सभा में उपस्थिति
- राम का कथन “होइहि केउ एक दास तुम्हारा” उनके व्यक्तित्व की किस विशेषता को दर्शाता है?
 - कूटनीति और चतुराई
 - विनम्रता और मर्यादा



- (ग) त्याग और समर्पण
 (घ) दृढ़ता और आत्मविश्वास
5. “सुनि मुनि बचन लखन मुसुकाने। बोले परसुधरहि अपमाने॥” लक्ष्मण के मुसकराने और उपहास भरे वचनों का क्या कारण था?
- (क) वे सभा में अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करना चाहते थे।
 (ख) उन्हें राम के प्रति अपना प्रेम प्रदर्शित करना था।
 (ग) वे परशुराम की शक्ति से अनभिज्ञ थे।
 (घ) वे परशुराम को चुनौती देना चाहते थे।

मेरी समझ मेरे विचार

नीचे दिए गए प्रश्नों पर चर्चा कीजिए और उनके उत्तर लिखिए—

1. “अरध निमेष कल्प सम बीता” पंक्ति का भाव स्पष्ट करते हुए बताइए कि कविता में यह किसके संदर्भ में कहा गया है और क्यों?
2. “सो बिलगाउ बिहाइ समाजा। न त मारे जैहहि सब राजा॥” पंक्ति के आधार पर बताइए कि परशुराम द्वारा दी गई इस चेतावनी का सभा में उपस्थित राज-समाज पर क्या प्रभाव पड़ा होगा? तर्क सहित उत्तर दीजिए।
3. तुलसीदास ने राम और लक्ष्मण के माध्यम से एक ही परिस्थिति के प्रति दो अलग-अलग प्रतिक्रियाएँ दिखाई हैं। आपकी दृष्टि में परशुराम के क्रोध को शांत करने के लिए राम का ‘विनय’ का मार्ग उचित है या लक्ष्मण के ‘तर्क’ का? अपने उत्तर का उचित कारण और तर्क भी प्रस्तुत कीजिए।
4. ‘हृदयँ न हरषु बिषादु कछु बोले श्रीरघुबीरु॥’ श्री राम के हृदय में न हर्ष था, न विषाद। यह उनके व्यक्तित्व के किन गुणों को दर्शाता है? उनका भावनात्मक संतुलन इस पूरे पाठ में उन्हें अन्य पात्रों से अलग कैसे स्थापित करता है?

मेरी कल्पना मेरे अनुमान

नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपनी कल्पना और अनुमान के आधार पर दीजिए—

1. कल्पना कीजिए कि आप जनक की सभा में उपस्थित एक राजा हैं। परशुराम जी के आगमन से लेकर उनके गमन तक की कथा अपने शब्दों में लिखिए।
2. “अति डरु उतरु देत नृपु नाही। कुटिल भूप हरषे मन माहीं॥” जनक द्वारा डर से चुप रहने पर अन्य राजा मन में प्रसन्न क्यों हुए होंगे?
 (संकेत— सोचिए, यह मनुष्य के व्यवहार की किस सच्चाई को उजागर करता है?)





विधा से संवाद

कविता का सौंदर्य

यह कविता तुलसीदास द्वारा रचित महाकाव्य *रामचरितमानस* के 'बालकांड' का एक अंश है जहाँ शिव-धनुष के टूटने से क्रोधित परशुराम के रोष भरे वाक्यों का उत्तर लक्ष्मण व्यंग्य वचनों से देते हैं। दोनों के बीच के ये संवाद कविता में नाटकीयता उत्पन्न करते हैं। संवादों के माध्यम से ही पूरी कविता का कथात्मक विकास होता है, संवाद ही चरित्र का निर्माण करते हैं और संवादों से ही भावों में विविधता भी आती है। इस प्रकार यह कविता काव्यात्मक विधा में संवाद-प्रस्तुति का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। नीचे कविता के संवादों की कुछ विशेषताएँ दी गई हैं। उन विशेषताओं को दर्शाने वाली पंक्तियों के उदाहरण कविता से ढूँढ़कर लिखिए।

संवादों की विशेषता

- राम की विनम्रता
- परशुराम का रौद्र रूप
- लक्ष्मण का प्रत्युत्तर
- पौराणिक संदर्भ
- नाटकीयता

भाव-पहचान एवं विश्लेषण

- आपने पढ़ा कि राजा जनक की सभा में उपस्थित विभिन्न पात्रों की मनःस्थिति अलग-अलग है। नीचे दिए गए भावों/मनःस्थिति को दर्शाने वाली पंक्तियों को कविता से चिह्नित कीजिए और बताइए कि यह भाव किस पात्र से संबंधित है और उसकी इस मनःस्थिति का कारण क्या है? आपकी सहायता के लिए एक उदाहरण नीचे दिया गया है।

चिंता, क्रोध, व्यग्रता, भय, संयम/विनम्रता, ईर्ष्या/कुटिलता

भाव/मनःस्थिति	संबंधित पंक्ति	संबंधित पात्र	मनःस्थिति का कारण
चिंता	बिधि अब सँवरी बात बिगारी	सीता की माता सुनयना	पुत्री सीता के भविष्य (विवाह) के प्रति आशंकित और चिंतित



- “अति डरु उतरु देत नृपु नाही।”

परशुराम के पूछने पर जनक का मौन भयजनित है या विवेकपूर्ण निर्णय? संवाद की स्थिति के आधार पर विश्लेषण कीजिए।

विश्लेषण कैसे करें

1. संदर्भ स्पष्ट कीजिए— आरंभ में यह बताइए कि यह पंक्ति/घटना किस स्थिति में आई है, उससे पहले क्या घट चुका था।
2. विश्लेषण में घटना का वर्णन कम, उसका कारण और प्रभाव अधिक लिखना होता है— केवल क्या हुआ नहीं, बल्कि क्यों हुआ लिखिए।
3. कारण → भाव → परिणाम का क्रम बनाइए।
4. निष्कर्ष दीजिए— अंत में 1-2 पंक्तियों में ‘अपना’ स्पष्ट निष्कर्ष लिखिए जैसे— ‘इससे स्पष्ट होता है कि...’ या ‘यह पंक्ति संकेत देती है कि...’
5. संक्षेप में क्या, क्यों, कैसे के आधार पर विश्लेषण कीजिए और निष्कर्ष लिखिए।

काव्य-पंक्ति और भाव

“रे नृप बालक काल बस बोलत तोहि न सँभारा।
धनुही सम तितुरारि धनु बिदित सकल संसारा॥”

- (क) यदि आप इन पंक्तियों को मंच पर बोलते, तो आपके चेहरे पर कौन-सा भाव होता?
- (ख) आपने अनुभव किया होगा कि इस कविता में परिस्थितिवाश प्रत्येक पात्र एक अलग भाव का प्रतिनिधि बन जाता है। निम्नलिखित पात्रों को आप कौन-कौन से भावों द्वारा प्रदर्शित करेंगे—

- परशुराम
- राजा जनक
- लक्ष्मण
- राम
- सभा में उपस्थित अन्य राजा



विषयों से संवाद

1. सभा में परशुराम के प्रति राम के व्यवहार से उनकी विनम्रता, मर्यादा, धीर और उदात्त चरित्र के संबंध में पता चलता है जो किसी भी कुशल शासक के लिए आवश्यक है। आपको किन-किन परिस्थितियों में इन विशेषताओं का परिचय देना पड़ता है? चर्चा कीजिए और लिखिए।





2. कविता में वर्णित प्रसंग सीता-स्वयंवर की सभा का है। प्राचीन भारतीय समाज में वर-चयन के लिए स्वयंवर की प्रथा प्रचलित थी। इसके अनेक उदाहरण मिलते हैं। ऐसी किसी एक पौराणिक-ऐतिहासिक आदि घटना/प्रसंग का वर्णन कीजिए जिससे स्वयंवर विधि द्वारा विवाह की जानकारी मिलती है।



1. परशुराम के क्रोध को देखकर सीता और उनकी माता सुनयना दोनों चिंतित हैं और सीता के लिए एक-एक पल युग के समान भारी और लंबा प्रतीत हो रहा है। उनकी मनःस्थिति का अनुमान लगाते हुए उस क्षण दोनों के बीच चल रहा मौन संवाद लिखिए।
2. सभा में हो रहे संवाद को दूर बैठी सीता, राजा जनक और अन्य लोग भी सुन रहे थे। अपनी कल्पना और अनुमान के आधार पर लिखिए कि उस समय सीता के मन में किस तरह के भाव उत्पन्न हो रहे होंगे? सीता के दृष्टिकोण से पूरी घटना का विश्लेषण कीजिए।
(संकेत— लक्ष्मण के प्रत्युत्तर पर चिंता, गर्व, हँसी, भय, शंका इत्यादि)
3. कविता में सभा में उपस्थित राजाओं ने अपनी वीरता, पराक्रम आदि का उल्लेख करते हुए अपना परिचय दिया है। यदि आपको अपना परिचय देना हो तो आप अपना परिचय किस प्रकार देना उचित समझेंगे? अपना परिचय देते हुए कुछ वाक्य लिखिए जिससे आपके व्यक्तित्व की महत्वपूर्ण बातों का पता चलता हो।



व्याकरण की बात

नीचे दी गई पंक्तियों को ध्यान से पढ़िए—

- “देखत भृगुपति बेषु कराला।”
- “बोले परसुधरहि अपमाने॥”
- “सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतू”

यहाँ परशुराम को विभिन्न नामों से संबोधित किया गया है, जैसे— भृगुपति, परसुधर और भृगुकुलकेतू। आप इस कविता में अनेक विशेषताएँ देख सकते हैं, जैसे— दोहा-चौपाई का क्रम से होना, बिना वक्ता का नाम बताए उनका कथन कह देना, मुहावरों का उपयोग करना आदि। नीचे इस कविता की कुछ विशेषताएँ और उनके एक-एक उदाहरण दिए गए हैं। एक-एक उदाहरण आप लिखिए।



विशेषता	अर्थ	उदाहरण
अनुप्रास अलंकार	एक ही वर्ण की बार-बार आवृत्ति	अरि करनी करि करिअ लराई
अतिशयोक्ति अलंकार	बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना	अरध निमेष कलप सम बीता
रूपक अलंकार	रूप का आरोपण करना	पद सरोज मेले दोउ भाई

बहुभाषिकता

यह कविता अवधी भाषा में लिखी गई है जो कि हिंदी भाषा का ही एक स्वरूप है और उत्तर प्रदेश के अनेक स्थानों पर बोली जाती है। कविता में ऐसे बहुत से शब्द आए हैं, जो अवधी भाषा के हैं। ऐसे शब्दों को पहचान कर उनके खड़ी बोली हिंदी रूप लिखिए। साथ ही आपकी भाषा में इनके लिए कौन-से शब्द प्रयुक्त होते हैं, उन्हें भी लिखिए।

उदाहरण-

अवधी शब्द	खड़ी बोली का शब्द	मेरी भाषा में शब्द
कोही	क्रोधी	
वेषु	वेष	

लोक में भाषा

नीचे कोष्ठक में कविता से कुछ शब्द चुनकर दिए गए हैं। उन शब्दों से संबंधित लोकोक्ति और उनका अर्थ लिखकर स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग कीजिए। आपकी सहायता के लिए एक उदाहरण नीचे दिया गया है।

मन राम राजा बात सिरु (सिर)

उदाहरण-

शब्द	लोकोक्ति	अर्थ
मन	मन के जीते जीत है, मन के हारे हारा	आत्मविश्वास, साहस और मनोबल से सफलता निश्चित है।





गद्य-रूप

नीचे लिखी चौपाई को पढ़िए—

“नाथ संभुधनु भंजनहार। होइहि केउ एक दास तुम्हार।।
आयसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही।।”

इस चौपाई को हम गद्य-रूप में भी लिख सकते हैं। इसमें राम परशुराम से विनम्रतापूर्वक कहते हैं— हे नाथ! शिव-धनुष को तोड़ने वाला आपका ही कोई एक दास होगा आपकी क्या आज्ञा है, मुझसे क्यों नहीं कहते? राम की यह बात सुनकर क्रोधित परशुराम कहते हैं।

अब आप नीचे दी गई चौपाई को गद्य-रूप में लिखिए—

“अति डरु उतर देत नृपु नाहीं। कुटिल भूप हरषे मन माहीं।।
सुर मुनि नाग नगर नर नारी। सोचहिं सकल त्रास उर भारी।।”



गतिविधियाँ

- यह कविता संवाद का सुंदर उदाहरण है। तालिका में दिए गए कथनों को पढ़कर बताइए कि कौन-सा कथन किसका हो सकता है। अपनी समझ से सही (✓) का चिह्न लगाइए—

कथन	राम	लक्ष्मण	परशुराम	जनक	सीता की माता (सुनयना)
शिव के धनुष को तोड़ने वाला आपका कोई दास ही हो सकता है।					
विधाता ने बनी-बनाई बात बिगाड़ दी।					
सेवक वह होता है जो सेवा का काम करे।					
इस कारण ये सब राजा आए हैं।					
बचपन में हमने ऐसी बहुत-सी धनुहियाँ तोड़ डाली हैं।					



क्या आज्ञा है, मुझसे क्यों नहीं कहते?					
कहो जनक, किस कारण यह भीड़ है?					
इसी धनुष पर इतनी ममता क्यों!					

2. *रामचरितमानस* के इस प्रसंग का मंचन लोकनाट्य, रामलीला और कठपुतली कला में बड़ी जीवंतता से किया जा सकता है। कलात्मक तकनीकों (ध्वनि, भाव, संगीत, वेशभूषा) का उपयोग करते हुए कविता को एक दृश्य नाटक के रूप में प्रस्तुत कीजिए।
3. ‘कठिन परिस्थितियों में भी सत्य कहने का साहस करना आवश्यक है।’ इस विषय पर कक्षा में एक परिचर्चा अथवा वाद-विवाद गतिविधि के माध्यम से अपने विचार साझा कीजिए।

मेरी पहेली

पाठ में से चुनकर कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। अब अपने समूह में मिलकर ऐसी पहेलियाँ बनाइए जिनके उत्तर निम्नलिखित हों—

समाचार धनुष मन नाग नगर

भाषा संगम

“अति रिस बोले बचन कठोरा। कहु जड़ जनक धनुष कै तोरा॥”

नीचे ‘धनुष’ शब्द के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित कुछ भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त शब्दों की सूची दी गई है।

कमान (हिंदी); धनुः, चापम् (संस्कृत); धणुख (पंजाबी); कमान (कौस) (उर्दू); कमान (कश्मीरी); धनुष, कमानु (सिंधी); धनुष्य (मराठी); धनुष, कामटुं (गुजराती); धनुश (कोंकणी); धनु (नेपाली); धनुक (बांग्ला); धनु (असमिया); लिरू (मणिपुरी); धनुष, धनु, कार्मुक (ओड़िआ); धनुस्सु, विल्लु (तेलुगू); विल् (तमिल); धनुस्सुं, विल्लुं (मलयालम); बिल्लु, धनुष (कन्नड़)

- इनके अतिरिक्त यदि आप धनुष शब्द को किसी और भाषा में भी जानते हैं तो उस भाषा में भी लिखिए।
- उपर्युक्त वाक्य को अपनी मातृभाषा में भी लिखिए।

<https://shabd.education.gov.in/lexicon.jsp>





बालकांड का यह अंश और गोस्वामी तुलसीदास जी की अन्य रचनाएँ इंटरनेट की सहायता से सुनिए और देखिए—

तुलसीदास— राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद

<https://www.youtube.com/watch?v=7laq-BLnig4>

<https://www.youtube.com/watch?v=M7yZx2C0O68>

दोहे— कबीर, रहीम, तुलसी

<https://www.youtube.com/watch?v=A5v38R3VwaE>

<https://www.youtube.com/watch?v=cnrjLCkggr4&>

गोस्वामी तुलसीदास

<https://www.youtube.com/watch?v=oCLrWoky6UI>

<https://www.youtube.com/watch?v=MJbKZoLLeSs>

कवि तुलसीदास और उनकी कविता

<https://www.youtube.com/watch?v=rE-iTNN6SsE>

शब्द-संपदा

भृगुपति	—	भृगुकुल के स्वामी
कराला	—	भयानक, डरावना
भुआला	—	राजा, महीप, भूपाल
सुभायँ	—	स्वभाव, आदत, सहज प्रकृति
चितवहिं	—	देखना, निरखना
खुटानी	—	पूरी होना, समाप्त होना
बहोरि	—	इकट्ठा करना, फिर, अनंतर, पीछे
आसिष/असीस	—	आशीर्वाद
ढोटा	—	पुत्र, बेटा, बालक
जोटा	—	जोड़ा, गोनी
लोचन	—	आँख, देखने की क्रिया



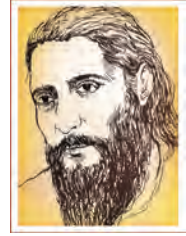
अनंत	—	अन्यत्र, और कहीं
चापखंड	—	धनुष का टुकड़ा, धनुष का भाग
रिस	—	रोष, क्रोध, गुस्सा
बेगि	—	शीघ्र, जल्दी, वेगपूर्वक
जहँ	—	जहाँ, जिस स्थान पर, जिस जगह
महि	—	पृथ्वी, महिमा, महत्त्व
लहि	—	तक, पर्यंत
त्रास	—	भय, डर
विधि	—	विधि, विधाता, ईश्वर
अरध निमेष	—	आधा क्षण, आधा पल, आधा पलक झपकना
कल्प (कल्प)	—	काल का एक विभाग, ब्रह्मा का एक दिन (एक हजार महायुग— 4 अरब 32 करोड़ मानव-वर्ष), प्रलय
बिलोके	—	देखा, अवलोकन किया
भीरु	—	भयभीत, डरा हुआ
भंजनिहारा	—	भंग करने वाला, तोड़ने वाला
आयसु	—	आज्ञा, आदेश
रिसाइ	—	क्रोध करना, कोप करना
कोही	—	क्रोधी
सहस्रबाहु	—	सहस्रबाहु, बाणासुर, शिव, स्कंद का एक अनुचर
बिलगाउ	—	अलग होना, अलग करने वाला
बिहाइ	—	छोड़कर
जैहहिं	—	जाएँगे
परसु (परशु)	—	फरसा, कुल्हाड़ी की तरह का एक शस्त्र
परसुधरहिं	—	परशुराम (फरसा धारण करने वाले)
लरिकार्ई	—	लड़कपन, बचपन में, बाल्यावस्था, चंचलता
भृगुकुलकेतू	—	भृगुकुल के दीपक, परशुराम के लिए संबोधन
तिपुरारि	—	त्रिपुरारी, शिव, शंकर





0901CH10

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'



सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जन्म सन् 1899 में बंगाल के महिषादल में हुआ। वे मूलतः गढ़ाकोला (उन्नाव), उत्तर प्रदेश के निवासी थे। निराला की औपचारिक शिक्षा नौवीं तक महिषादल में ही हुई। उन्होंने स्वाध्याय से संस्कृत, बांग्ला और अंग्रेजी का ज्ञान अर्जित किया।

उनकी प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं— *अनामिका*, *परिमल*, *गीतिका*, *कुसुमुत्ता* और *नए पत्ते*। उपन्यास, कहानी, आलोचना और निबंध लेखन में भी उनकी ख्याति अविस्मरणीय है। *निराला रचनावली* के आठ खंडों में उनका संपूर्ण साहित्य प्रकाशित है। दार्शनिकता, विद्रोह, क्रांति, प्रेम की तरलता और प्रकृति का विराट तथा उदात्त चित्र उनकी रचनाओं में उपस्थित है। छायावादी रचनाकारों में उन्होंने सबसे पहले मुक्त छंद का प्रयोग किया। उपेक्षितों और पीड़ितों के प्रति उनकी कविताओं में गहरी सहानुभूति मिलती है। 'निराला' का निधन सन् 1961 में हुआ।



‘भारति, जय, विजयकरे!’ कविता ‘निराला’ की देशप्रेम से ओत-प्रोत एक प्रेरणादायक रचना है। कविता के आरंभ में ही कवि ‘भारति, जय, विजयकरे!’ कहकर भारत को विजयश्री प्राप्त करने की कामना करता है। वह भारतभूमि को ‘कनक-शस्य-कमलधरे!’ कहकर संबोधित करता है जो भारत की कृषि-परंपरा और श्रम के सौंदर्य को दर्शाता है। कविता में भारत की भौगोलिक सुंदरता का ऐसा चित्र खींचा गया है मानो भारत कोई देवी हो, जिसके चरणों को समुद्र अपने जल से धोता है। नदी, वन, पुष्प, हिमालय, गंगा आदि प्राकृतिक शोभा को भारत के वस्त्राभूषण की तरह प्रस्तुत किया गया है। कवि भारत को एक चेतन सत्ता के रूप में देखता है, जिसकी दिशाओं में ‘ओंकार’ की गूँज हो रही है और जो अनेक तरह के स्वरो और विचारों से समृद्ध है।





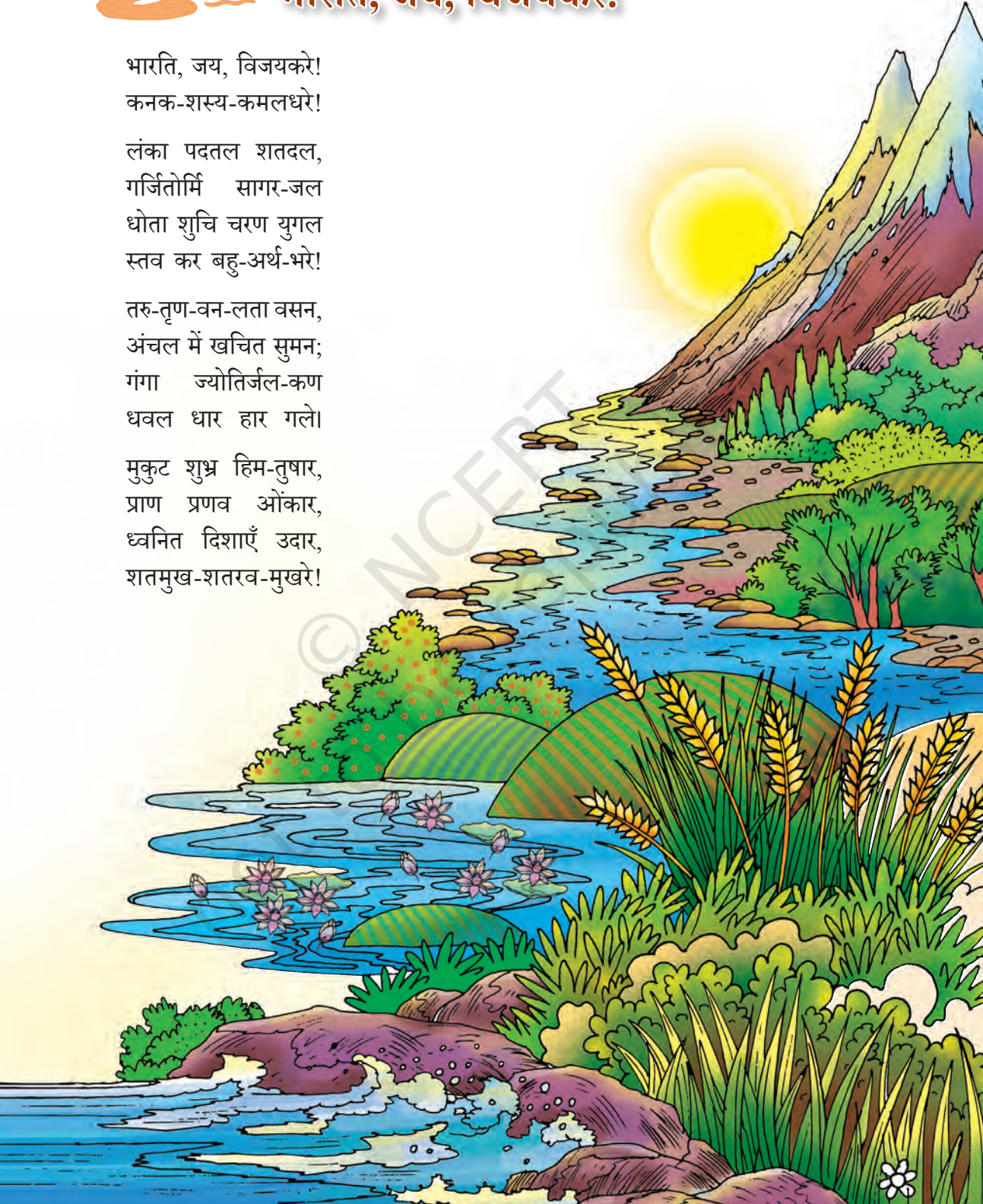
भारति, जय, विजयकरे!

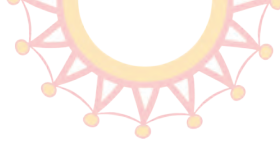
भारति, जय, विजयकरे!
कनक-शस्य-कमलधरे!

लंका पदतल शतदल,
गर्जितोर्मि सागर-जल
धोता शुचि चरण युगल
स्तव कर बहु-अर्थ-भरे!

तरु-तृण-वन-लता वसन,
अंचल में खचित सुमन;
गंगा ज्योतिर्जल-कण
धवल धार हार गले।

मुकुट शुभ्र हिम-तुषार,
प्राण प्रणव ओंकार,
ध्वनित दिशाएँ उदार,
शतमुख-शतरव-मुखरे!





अभ्यास



रचना से संवाद

मेरे उत्तर मेरे तर्क

निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

- “भारति, जय, विजयकरे” कविता में विशेष रूप से—
 - भारत की भौगोलिक संरचना की प्रशस्ति की गई है।
 - भारत की सांस्कृतिक विविधता बताई गई है।
 - भारत के ज्ञान, प्रकृति और संपन्नता की प्रशंसा की गई है।
 - भारत के खनिज पदार्थों के बारे में बताया गया है।
- “कनक-शस्य-कमल धरे” पंक्ति का भावार्थ है—
 - भारत की धन-धान्य संपन्नता
 - भारत की नदियों का सौंदर्य
 - भारत के लोक-जीवन की सुंदरता
 - भारत की सैन्य शक्ति और औद्योगिक विकास
- समस्त विश्व में भारत के महत्व का उद्घोष करने वाली पंक्तियाँ हैं—
 - गंगा ज्योतिर्जल-कण/ धवल धार हार गले
 - गर्जितोर्मि सागर-जल/ धोता शुचि चरण युगल
 - भारति, जय, विजयकरे/ कनक-शस्य-कमलधरे!
 - ध्वनित दिशाएँ उदार/ शतमुख-शतरव-मुखरे!
- कविता की भाषा और शैली किस विशेषता से संपन्न है?
 - सरल, बोल-चाल की भाषा
 - संस्कृतनिष्ठ और समासयुक्त
 - सरस और हास्य-व्यंग्यपूर्ण
 - संवादात्मक और विश्लेषणात्मक



5. भारत के वस्त्रों में 'तरु-तृण-वन-लता' और गले में 'गंगा-धारा' को चित्रित कर कवि किस प्रकार की चेतना का संदेश देते हैं?
- (क) पर्यावरणीय और सांस्कृतिक
(ख) राष्ट्रीयता और देशप्रेम
(ग) ऐतिहासिक और भौगोलिक
(घ) सामाजिक और राजनीतिक

अर्थ और भाव

नीचे दी गई पंक्तियों का अर्थ समझते हुए इनका भाव स्पष्ट कीजिए—

- (क) “लंका पदतल शतदल,
गर्जितोर्मि सागर-जल
धोता शुचि चरण युगल!”
- (ख) “प्राण प्रणव ओंकार,
ध्वनित दिशाएँ उदार,
शतमुख-शतरव-मुखरे!”

मेरी समझ मेरे विचार

नीचे दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा कीजिए और उनके उत्तर लिखिए—

- कविता में कवि की किस भावना की अभिव्यक्ति मिलती है?
- कविता में भारत के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन किस प्रकार किया गया है? क्या आप मानते हैं कि प्रकृति का संरक्षण करना भी देशप्रेम का काम है? क्यों?
- “कनक-शस्य-कमलधरे!” पंक्ति भारतभूमि की किन-किन विशेषताओं की ओर संकेत कर रही है?
- “मुकुट शुभ्र हिम-तुषार” पंक्ति में हिमालय को भारत का मुकुट बताया गया है, क्यों?



विधा से संवाद

कविता का सौंदर्य

नीचे दी गई पंक्तियों को पढ़िए —

“भारति, जय, विजयकरे!
कनक-शस्य-कमलधरे!”





इन पंक्तियों में कवि ने चित्रात्मक भाषा का प्रयोग करते हुए भारतभूमि का मनोरम चित्र प्रस्तुत किया है। इस कविता की कुछ अन्य विशेषताओं की सूची नीचे दी गई है। कविता में से उन विशेषताओं वाली पंक्तियों को ढूँढ़कर लिखिए—

विशेषताएँ	कविता की पंक्तियाँ
प्रकृति का मानवीकरण	
आलंकारिक प्रयोग	
समस्त पद/सामासिक पद का प्रयोग	
संस्कृतनिष्ठ भाषा प्रयोग	



विषयों से संवाद

- स्वतंत्रता-पूर्व लिखी इस कविता में भारत को ज्ञान, कृषि और संस्कृति के प्रतीक/परिचायक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। वर्तमान संदर्भ में यदि आपको भारत को एक नए रूप में प्रस्तुत करने का अवसर मिले तो आप भारत की किन विशेषताओं और विविधताओं को सम्मिलित करेंगे?
- “शतमुख-शतरव-मुखरे!” पंक्ति में भारत के विविध पर्व, उत्सव और रीति-रिवाज किस प्रकार ‘एक भारत, श्रेष्ठ भारत’ की संकल्पना को साकार करते हैं?
- भारत को सुदृढ़ करने में इसकी प्रकृति, संस्कृति और ज्ञान-परंपरा के महत्व को बताते हुए संक्षिप्त लेख लिखिए।
- कविता में गंगा को भारत के स्वच्छ और श्वेत हार एवं हिमालय को मुकुट के रूप में अभिव्यक्त किया गया है। वर्तमान संदर्भ में बताइए कि बढ़ते प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन ने हमारी नदियों और हिमालय को किस प्रकार प्रभावित किया है?

विविध रंग भारत के

आप अपने कक्षा-समूह में मिलकर भारत की सांस्कृतिक विविधता पर आधारित एक पावरपॉइंट प्रस्तुति/पोस्टर/चार्ट/कोलाज तैयार कीजिए और इसे अपनी कक्षा में दिखाइए। आप भारत के विभिन्न राज्यों पर केंद्रित पावरपॉइंट प्रस्तुति/पोस्टर/चार्ट/कोलाज भी बना सकते हैं।



सृजन

- मान लीजिए आपको भारत को एक मनुष्य के रूप में कल्पित करते हुए सुसज्जित करने का अवसर मिले तो आप अपने राज्य के किन सांस्कृतिक, पारंपरिक वेशभूषा, आभूषण, चिह्नों, पुष्पों आदि का प्रयोग कर उसकी साज-सज्जा करेंगे?



2. भारत पर आधारित एक डाक टिकट, पोस्टर या पुस्तक के लिए आवरण पृष्ठ बनाइए और बताइए कि आप उसमें किन-किन प्रतीकों को सम्मिलित करेंगे और क्यों?
3. **नदी की यात्रा**
गंगा नदी की अपने उद्गम से लेकर बंगाल की खाड़ी में विलीन होने तक की पूरी यात्रा के बीच में आने वाली प्राकृतिक, सांस्कृतिक, भाषिक आदि विशेषताओं का वर्णन करते हुए एक रोचक यात्रा-वृत्तांत लिखिए।
(संकेत—पर्वतीय सौंदर्य से लेकर गंगासागर तक की संस्कृति इत्यादि)



भाषा से संवाद

व्याकरण की बात

बहुभाषी देश हमारा

भारत की एक विशेषता उसकी बहुभाषिकता है। यदि आपको एक सचेत नागरिक के रूप में भारत से अपनी मातृभाषा में संवाद का अवसर मिले तो आप किन विषयों पर और क्या-क्या संवाद करना चाहेंगे? इन संवादों को अपनी मातृभाषा और हिंदी में लिखिए।
(संकेत—समाज, पर्यावरण, संस्कृति आदि।)

मातृभाषा और भाव

- “स्तव कर बहु-अर्थ-भरे”

उपर्युक्त पंक्ति में भारत की प्रशंसा विविध अर्थों में की गई है। आप भी अपनी मातृभाषा में भारत की स्तुति के लिए एक कविता की रचना कीजिए और उसका भावार्थ हिंदी में भी लिखिए।

समास—समस्त पद एवं विग्रह

- “कनक-शस्य-कमलधरे”

उपर्युक्त पंक्ति में ‘कनक-शस्य’ का अर्थ है—कनक के समान शस्य (सोने जैसी फसलें) और कमलधरे का अर्थ है—हे कमल को धारण करने वाली! ये शब्द समास शब्द कहलाते हैं। ‘कनक-शस्य’ और ‘कमलधरा’ समस्त पद/सामासिक पद हैं। कमलधरे संबोधन शब्द है।

समास का अर्थ है संक्षेप। समास में दो या अनेक शब्दों के मेल से एक नए शब्द की रचना होती है। समास रचना में प्रायः दो पद (शब्द) होते हैं। पहले पद को पूर्वपद और दूसरे पद को उत्तरपद कहते हैं। समास रचना से बने शब्द को ‘समस्त पद’ कहते हैं। यदि समास रचना से बने शब्द (समस्त पद) के अंग





अलग-अलग करने हों, तो उस प्रक्रिया को समास विग्रह कहते हैं। आपने ‘क्या लिखूँ?’ निबंध के अभ्यास में समास और सामासिक पदों के बारे में विस्तार से जाना है।

कविता में से चुनकर कुछ सामासिक पद (शब्द) नीचे दिए गए हैं। उनके समास-विग्रह अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए।

शतदल

ज्योतिर्जल

शतमुख

सागरजल

अलंकार— समझ और प्रयोग

- “शतमुख-शतरव-मुखरे!”

उपर्युक्त पंक्ति के ‘शतमुख’ और ‘शतरव’ में ‘श’ वर्ण की पुनरावृत्ति हो रही है, इसीलिए यहाँ अनुप्रास अलंकार है।

- “मुकुट शुभ्र हिम-तुषार”

उपर्युक्त पंक्ति में हिमालय को भारत का मुकुट कहा गया है। वास्तव में हिमालय मुकुट नहीं है, लेकिन कवि ने कल्पना के बल पर उसे मुकुट का रूप दे दिया। इससे भारत की छवि भव्य और दिव्य बन जाती है। यहाँ गुण की अत्यंत समानता के कारण उपमेय में उपमान का अभेद स्थापित किया गया है, इसीलिए यहाँ रूपक अलंकार है।

‘रैदास के पद’ पाठ में आपने अलंकार के विषय में विस्तार से जाना-समझा है। अब निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- कविता में जहाँ-जहाँ अनुप्रास अलंकार आया है, उन पंक्तियों को खोजकर लिखिए।
- कविता की उन पंक्तियों को खोजिए जहाँ रूपक अलंकार है। साथ ही यह भी बताइए कि कवि ने किस प्राकृतिक दृश्य या वस्तु को भारत का रूप मानकर चित्रित किया है?



गतिविधियाँ

मिलकर लें शपथ

- “तरु-तृण-वन-लता वसन/अंचल में खचित सुमन”

वन, लता, पुष्प आदि भारत के अमूल्य प्राकृतिक संसाधन हैं। इनके संरक्षण के लिए सरकार द्वारा बनाए गए अधिनियमों के बारे में सूचना एकत्रित कीजिए और वन संरक्षण के लिए बनाए नियमों पर विचार कीजिए।



भाषा संगम

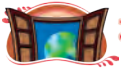
‘कनक-शस्य-कमलधरे’

कविता में आए ‘शस्य’ शब्द का अर्थ ‘उपज’ भी होता है। नीचे ‘उपज’ शब्द के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित कुछ भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त शब्दों की सूची दी गई है।

जो उपजा हो, पैदावार, फसल (हिंदी); शस्यम् (संस्कृत); उपज, पैदावार (पंजाबी); पैदावार (उर्दू); पाँदावार (कश्मीरी); उपज, पैदावार (सिंधी); पीक (मराठी); ऊपज, पेदाश (गुजराती); पीक (कोंकणी); उब्जावाली, उपज (नेपाली); फसल (बांग्ला); शस्य, खेति, फचल, कृषि जात वस्तु (असमिया); महै मरोङ् थाबा पोत्थोक (मणिपुरी); फसल, खेति (ओड़िआ); पंट (तेलुगु); विळैच्चल् (तमिल); विळवुं (मलयालम); बेळे फसलु (कन्नड़)।

- इनके अतिरिक्त यदि आप ‘शस्य’ शब्द को किसी और भाषा में भी जानते हैं तो उस भाषा में भी लिखिए।
- उपर्युक्त वाक्य को अपनी मातृभाषा में भी लिखिए।

<https://shabd.education.gov.in/lexicon.jsp>



झरोखे से

सूर्यकांत त्रिपाठी ‘निराला’ की भाँति मैथिलीशरण गुप्त ने भी भारत का मनोरम और ओजस्वी गुणगान किया है। आइए, नीचे उनकी चर्चित कविता ‘जय जय भारतमाता’ का एक अंश पढ़ते हैं।

जय जय भारतमाता

जय जय भारतमाता!
तेरा बाहर भी घर जैसा रहा प्यार ही पाता।
ऊँचा हिया हिमालय तेरा
उसमें कितना दरद भरा
फिर भी आग दबाकर अपनी
रखता है वह हमें हरा
सौ सोतों से फूट-फूटकर पानी टूटा आता
जय जय भारतमाता!

— मैथिलीशरण गुप्त



(इस कविता को पुस्तकालय से ढूँढ़कर पूरा पढ़िए।)





- देशप्रेम से संबंधित अन्य कविताएँ पुस्तकालय, इंटरनेट से खोजकर पढ़िए और किसी एक कविता का कक्षा में वाचन भी कीजिए।
- इस कविता की तरह ही संस्कृतनिष्ठ शब्दावली से युक्त निराला की एक अन्य कविता, 'वर दे, वीणावादिनि वर दे!' पुस्तकालय, इंटरनेट से ढूँढ़कर पढ़िए।

शब्द-संपदा

भारति/भारती	—	सरस्वती, वाणी, वाणी की अधिष्ठात्री, भारतमाता
कनक	—	सोना, पलाश, चंपा
शस्य	—	फसल, खेती, अन्न, धान्य, वृक्षों का फल, नई घास, कोमल तृण, सद्गुण
पदतल	—	तलवा, पैरों के नीचे
शतदल	—	कमल
गर्जितोर्मि/गर्जि	—	बादलों का गर्जन, गरजती तरंगों का
शुचि	—	पवित्र, शुद्ध, निर्मल, साफ, निश्छल, निष्कपट, श्वेत, उजला
युगल	—	जोड़ा, युग्म
स्तव	—	प्रशंसा, स्तुति और स्तोत्र, एक पदार्थ
तरु	—	वृक्ष, पेड़
तृण	—	तिनका, घास, खर-पात
लता	—	जमीन या किसी आधार पर फैलने वाला पौधा, वल्लरी, बेल
वसन	—	वस्त्र, आवरण, निवास, मूर्ति, प्रतिमा
अंचल	—	देश का प्रांत-भाग, आंचल, कोना, तट, किनारा, वस्त्र का छोर
खचित	—	चिह्नित, अंकित, जड़ा हुआ, आबद्ध
सुमन	—	पुष्प, फूल, गेहूँ, मनोहर, सुंदर
ज्योतिर्जल/ज्योतिस्	—	प्रकाश, रोशनी, लौ, सूर्य, नक्षत्र, अग्नि
धवल	—	सफेद, श्वेत, स्वच्छ, निर्मल, सुंदर
धार	—	जोर की वर्षा, धारा के रूप में बरसना
शुभ्र	—	उज्ज्वल, चमकीला, सफेद, श्वेतवर्ण, सफेद रंग, चाँदी



हिम	—	शीतल बर्फ, पाला, हिमालय पर्वत, चंदन, चंद्रमा
तुषार	—	बर्फ, हिम, हवा में मिली भाप जो जमकर श्वेत कणों के रूप में पृथ्वी पर गिरती है
प्राण	—	वायु, साँस, बल, जीवन
प्रणव	—	ओंकार, परमेश्वर, ढोल
ओंकार	—	‘ओम्’ मंत्र या इसका उच्चारण, आरंभ
उदार	—	दानशील, दयालु
शतमुख	—	सौ मुख
शतरव	—	सौ की संख्या में ध्वनि, शब्द शोर, गुँजार
मुखरे/मुखर	—	बजता, शब्द करता हुआ, शोर करने वाला





0901CH11

सुभद्रा कुमारी चौहान



सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म 1904 में उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में हुआ था। उनकी आरंभिक शिक्षा प्रयागराज में हुई। अपने समय की प्रसिद्ध रचनाकार होने के साथ-साथ वह एक स्वतंत्रता सेनानी भी थीं जिसके कारण उन्हें दो बार जेल भी जाना पड़ा था। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से जनमानस में राष्ट्रीय चेतना जगाई।

उनके लेखन में देशप्रेम, स्त्री-केंद्रित विषयों और स्वाधीनता संग्राम के प्रति गहन प्रतिबद्धता दिखाई देती है। उनकी भाषा की सहजता ने उनकी रचनाओं को व्यापक लोकप्रियता दिलाई। उनकी कुछ प्रमुख रचनाएँ हैं— मुकुल, त्रिधारा (कविता संग्रह), बिखरे मोती, उन्मादिनी, सीधे-सादे चित्र (कहानी संग्रह), कदंब का पेड़, सभा का खेल (बाल साहित्य)। सुभद्रा कुमारी चौहान को उनके कविता संग्रह मुकुल तथा कहानी संग्रह बिखरे मोती के लिए दो बार 'सेकसरिया पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। सन् 1948 में उनकी आकस्मिक मृत्यु हो गई। भारतीय डाक विभाग ने उनके सम्मान में एक डाक टिकट भी जारी किया।



‘झाँसी की रानी’ सुभद्रा कुमारी चौहान की बहुत प्रसिद्ध कविता है। यह कविता 1857 के स्वतंत्रता संग्राम की पृष्ठभूमि पर लिखी गई है। 1857 की क्रांति भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का अविस्मरणीय अध्याय है। यह कविता रानी लक्ष्मीबाई के जीवन-वृत्त, उनके संघर्ष और विद्रोह से हमारा ओजपूर्ण साक्षात्कार कराती है। यह कविता वीरता, उत्साह और देशप्रेम की भावना से ओत-प्रोत है। यह पाठकों में जोश और साहस का संचार करती है तथा अपने देश के प्रति गर्व एवं स्वतंत्रता के लिए समर्पण की भावना जगाती है। कविता की कथात्मक शैली और गेयता इसे और अधिक जीवंत एवं प्रभावशाली बनाती है।





झाँसी की रानी

सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आई फिर से नई जवानी थी,
गुमी हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फ़िरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी,

चमक उठी सन् सत्तावन में
वह तलवार पुरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥

कानपूर के नाना की मुँहबोली बहन 'छबीली' थी,
लक्ष्मीबाई नाम, पिता की वह संतान अकेली थी,
नाना के सँग पढ़ती थी वह, नाना के सँग खेली थी,
बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी उसकी यही सहेली थी,

वीर शिवाजी की गाथाएँ
उसको याद ज़बानी थीं।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार,
देख मराठे पुलकित होते उसकी तलवारों के वार,
नकली युद्ध, व्यूह की रचना और खेलना खूब शिकार,
सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना, ये थे उसके प्रिय खिलवार,



महाराष्ट्र-कुल-देवी उसकी
भी आराध्य भवानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥

हुई वीरता की वैभव के साथ सगाई झाँसी में,
ब्याह हुआ रानी बन आई लक्ष्मीबाई झाँसी में,
राजमहल में बजी बधाई खुशियाँ छाई झाँसी में,
सुभट बुँदेलों की विरुदावलि-सी वह आई झाँसी में,

चित्रा ने अर्जुन को पाया,
शिव से मिली भवानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥

उदित हुआ सौभाग्य, मुदित महलों में उजयाली छाई,
किंतु कालगति चुपके-चुपके काली घटा घेर लाई,
तीर चलाने वाले कर में उसे चूड़ियाँ कब भाई,
रानी विधवा हुई हाय! विधि को भी नहीं दया आई,

निःसंतान मरे राजाजी
रानी शोक-समानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥



बुझा दीप झाँसी का तब डलहौजी मन में हरषाया,
राज्य हड़प करने का उसने यह अच्छा अवसर पाया,
फौरन फौजें भेज दुर्ग पर अपना झंडा फहराया,
लावारिस का वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य झाँसी आया,

अश्रुपूर्ण रानी ने देखा
झाँसी हुई बिरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥

अनुनय-विनय नहीं सुनता है, विकट फ़िरंगी की माया,
व्यापारी बन दया चाहता था जब यह भारत आया,
डलहौजी ने पैर पसारें अब तो पलट गई काया,
राजाओं नव्वाबों को भी उसने पैरों ठुकराया,

रानी दासी बनी, बनी यह
दासी अब महरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥



छिनी राजधानी देहली की, लिया लखनऊ बातों-बात,
कैद पेशवा था बिठूर में, हुआ नागपुर का भी घात,
उदैपूर, तंजोर, सतारा, करनाटक की कौन बिसात,
जब कि सिंध, पंजाब, ब्रह्म पर अभी हुआ था वज्र-निपात,

बंगाले, मद्रास आदि की
भी तो यही कहानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥



रानी रोई रनिवासों में बेगम ग़म से थीं बेजार
उनके गहने-कपड़े बिकते थे कलकत्ते के बाजार,
सरे-आम नीलाम छापते थे अंग्रेजों के अखबार,
'नागपूर के जेवर ले लो' 'लखनऊ के लो नौलख हार',

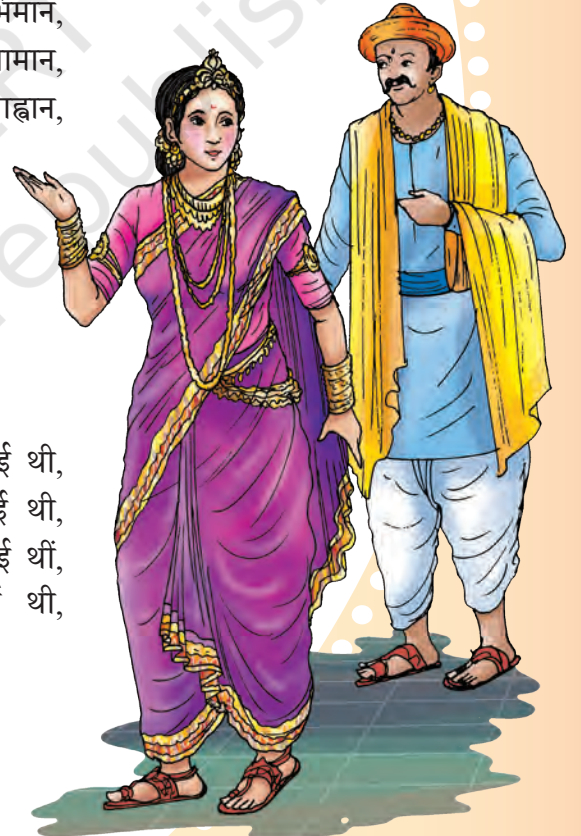
यों परदे की इज़्जत पर-
देशी के हाथ बिकानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥

कुटियों में थी विषम वेदना, महलों में आहत अपमान,
वीर सैनिकों के मन में था, अपने पुरखों का अभिमान,
नाना धुंधूपंत पेशवा जुटा रहा था सब सामान,
बहिन छबीली ने रण-चंडी का कर दिया प्रकट आह्वान,

हुआ यज्ञ प्रारंभ उन्हें तो
सोई ज्योति जगानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥

महलों ने दी आग, झोंपड़ी ने ज्वाला सुलगाई थी,
यह स्वतंत्रता की चिनगारी अंतरतम से आई थी,
झाँसी चेती, दिल्ली चेती, लखनऊ लपटें छाई थीं,
मेरठ, कानपुर, पटना ने भारी धूम मचाई थी,

जबलपुर, कोल्हापुर में भी
कुछ हलचल उकसानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥



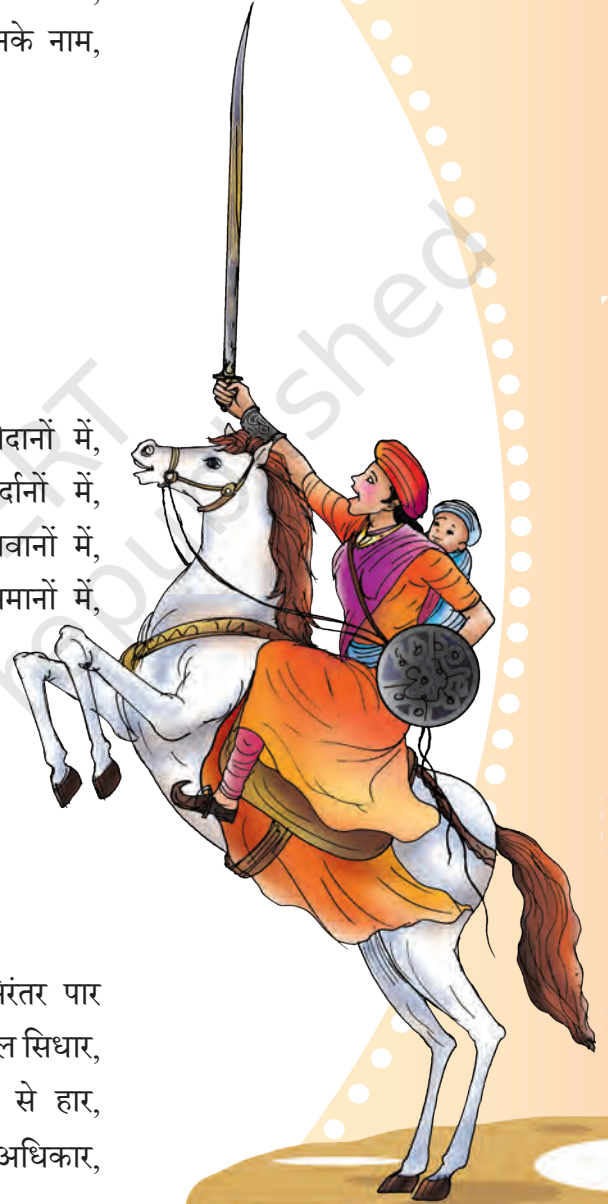
इस स्वतंत्रता-महायज्ञ में कई वीरवर आए काम
नाना धुंधूपंत, ताँतिया, चतुर अजीमुल्ला सरनाम,
अहमद शाह मौलवी, ठाकुर कुंवरसिंह सैनिक अभिराम,
भारत के इतिहास-गगन में अमर रहेंगे जिनके नाम,

लेकिन आज जुर्म कहलाती
उनकी जो कुरबानी थी।
बुंदेले हरबालों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥

इनकी गाथा छोड़ चलें हम झाँसी के मैदानों में,
जहाँ खड़ी है लक्ष्मीबाई मर्द बनी मर्दानों में,
लेफ्टिनेंट वॉकर आ पहुँचा, आगे बढ़ा जवानों में,
रानी ने तलवार खींच ली, हुआ द्वंद्व असमानों में,

जख्मी होकर वॉकर भागा,
उसे अजब हैरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥

रानी बढ़ी कालपी आई, कर सौ मील निरंतर पार
घोड़ा थक कर गिरा भूमि पर, गया स्वर्ग तत्काल सिधार,
यमुना-तट पर अंग्रेजों ने फिर खाई रानी से हार,
विजयी रानी आगे चल दी, किया ग्वालियर पर अधिकार,



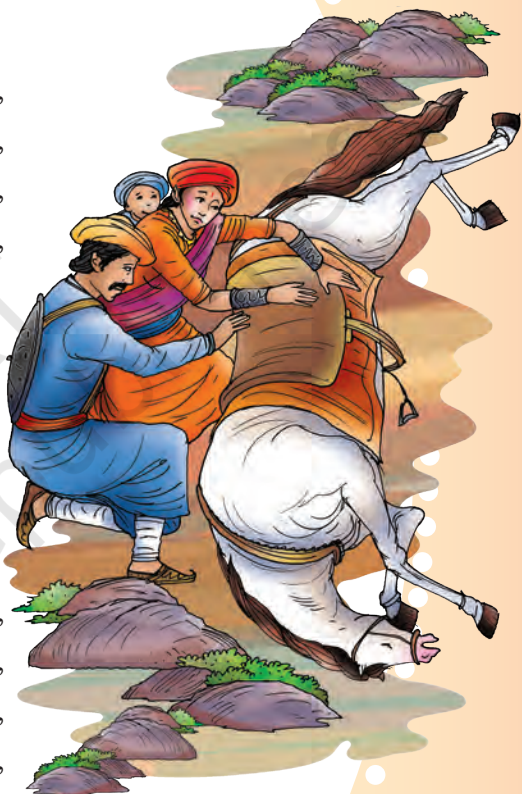
अंग्रेजों के मित्र सिंधिया
ने छोड़ी रजधानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥

विजय मिली, पर अंग्रेजों की फिर सेना घिर आई थी,
अबके जनरल स्मिथ सन्मुख था, उसने मुँह की खाई थी,
काना और मंदरा सखियाँ रानी के संग आई थीं,
युद्ध क्षेत्र में उन दोनों ने भारी मार मचाई थी,

पर, पीछे हटू रोज आ गया,
हाय! घिरी अब रानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥

तो भी रानी मार-काटकर चलती बनी सैन्य के पार,
किंतु सामने नाला आया, था यह संकट विषम अपार,
घोड़ा अड़ा, नया घोड़ा था, इतने में आ गए सवार,
रानी एक, शत्रु बहुतेरे, होने लगे वार पर वार,

घायल होकर गिरी सिंहनी
उसे वीर-गति पानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥



रानी गई सिधार, चिता अब उसकी दिव्य सवारी थी,
मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी,
अभी उम्र कुल तेइस की थी, मनुज नहीं अवतारी थी,
हमको जीवित करने आई बन स्वतंत्रता नारी थी,

दिखा गई पथ, सिखा गई
हमको जो सीख सिखानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥

जाओ रानी याद रखेंगे हम कृतज्ञ भारत वासी,
यह तेरा बलिदान जगावेगा स्वतंत्रता अविनाशी,
होवे चुप इतिहास, लगे सच्चाई को चाहे फाँसी,
हो मदमाती विजय, मिटा दे गोलों से चाहे झाँसी,

तेरा स्मारक तू ही होगी,
तू खुद अमिट निशानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥





अभ्यास



रचना से संवाद

मेरे उत्तर मेरे तर्क

निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

- ‘झाँसी की रानी’ कविता की पंक्ति “बूढ़े भारत में भी आई फिर से नई जवानी थी” में ‘नई जवानी’ शब्द किस भाव को व्यक्त करता है?
 - देश का स्वाभिमान
 - विद्रोह की चिंगारी
 - स्वाधीनता का भय
 - भारत की युवावस्था
- लक्ष्मीबाई को ‘छबीली’ कहना उनके व्यक्तित्व की किस विशेषता को दर्शाता है?
 - विनम्रता
 - शोभायुक्त
 - सहिष्णुता
 - कठोरता
- “बुझा दीप झाँसी का” पंक्ति का भावार्थ है—
 - अंग्रेजों का झाँसी पर अधिकार हो जाना
 - झाँसी राज्य की उम्मीदों का नष्ट हो जाना
 - राजा की आकस्मिक मृत्यु होना
 - रानी के जीवन में उदासी होना
- “इस स्वतंत्रता-महायज्ञ में कई वीरवर आए काम” पंक्ति में स्वतंत्रता आंदोलन की किस ऐतिहासिक घटना की ओर संकेत किया गया है?
 - असहयोग आंदोलन
 - भारत छोड़ो आंदोलन
 - 1857 की क्रांति
 - सविनय अवज्ञा आंदोलन



5. “व्यापारी बन दया चाहता था जब यह भारत आया” पंक्ति में ‘यह’ शब्द किसके लिए कहा गया है?
- (क) नवाबों के लिए
 (ख) जनरल डलहौजी के लिए
 (ग) लेफ्टिनेंट वॉकर के लिए
 (घ) ब्रिटिश राज के लिए

मेरी समझ मेरे विचार

नीचे दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा कीजिए और उनके उत्तर लिखिए—

1. ‘झाँसी की रानी’ कविता के आधार पर बताइए कि लक्ष्मीबाई के प्रिय खेल कौन-कौन से थे? उनका बचपन दूसरों से किस प्रकार भिन्न था?
2. “किंतु कालगति चुपके-चुपके काली घटा घेर लाई” पंक्ति के माध्यम से किस घटना की ओर संकेत किया गया है?
3. “महलों ने दी आग, झोंपड़ी ने ज्वाला सुलगाई थी” पंक्ति समाज के विभिन्न वर्गों की एकता को दर्शाती है, इस एकता का स्वतंत्रता संग्राम के संदर्भ में क्या महत्व है?
4. “सरे-आम नीलाम छापते थे अंग्रेजों के अखबार” पंक्ति में ‘नीलाम छापते’ शब्द किसकी ओर संकेत करता है? यह भी बताइए कि किसकी नीलामी की जाती थी और क्यों?
5. “अभी उग्र कुल तेइस की थी, मनुज नहीं अवतारी थी” पंक्ति में ‘अवतारी’ शब्द व्यक्ति के विशेष गुणों की ओर इंगित कर रहा है। कविता के आधार पर बताइए कि लक्ष्मीबाई के किन गुणों के कारण उनको ‘अवतारी’ कहा गया है?





विधा से संवाद

कविता में कहानी

यह कविता लक्ष्मीबाई के जीवन की घटनाओं पर आधारित है और अपनी संरचना में एक कथात्मक कविता है। कथात्मक कविता ऐसी कविता को कहते हैं जिसमें कविता और कहानी के तत्व परस्पर जुड़े होते हैं तथा घटनाओं का एक क्रम होता है। इस कविता में भी लक्ष्मीबाई के बचपन से लेकर वीरगति प्राप्त होने तक की कथा क्रम से देखने को मिलती है। पाठ की संरचना को समझते हुए इसमें वर्णित प्रमुख घटनाओं को समय-रेखा (टाइमलाइन) पर दर्शाएँ।

(संकेत- लक्ष्मीबाई का बचपन, विवाह, अन्य घटनाएँ आदि।)



विषयों से संवाद

साझा साथ/साझा संघर्ष

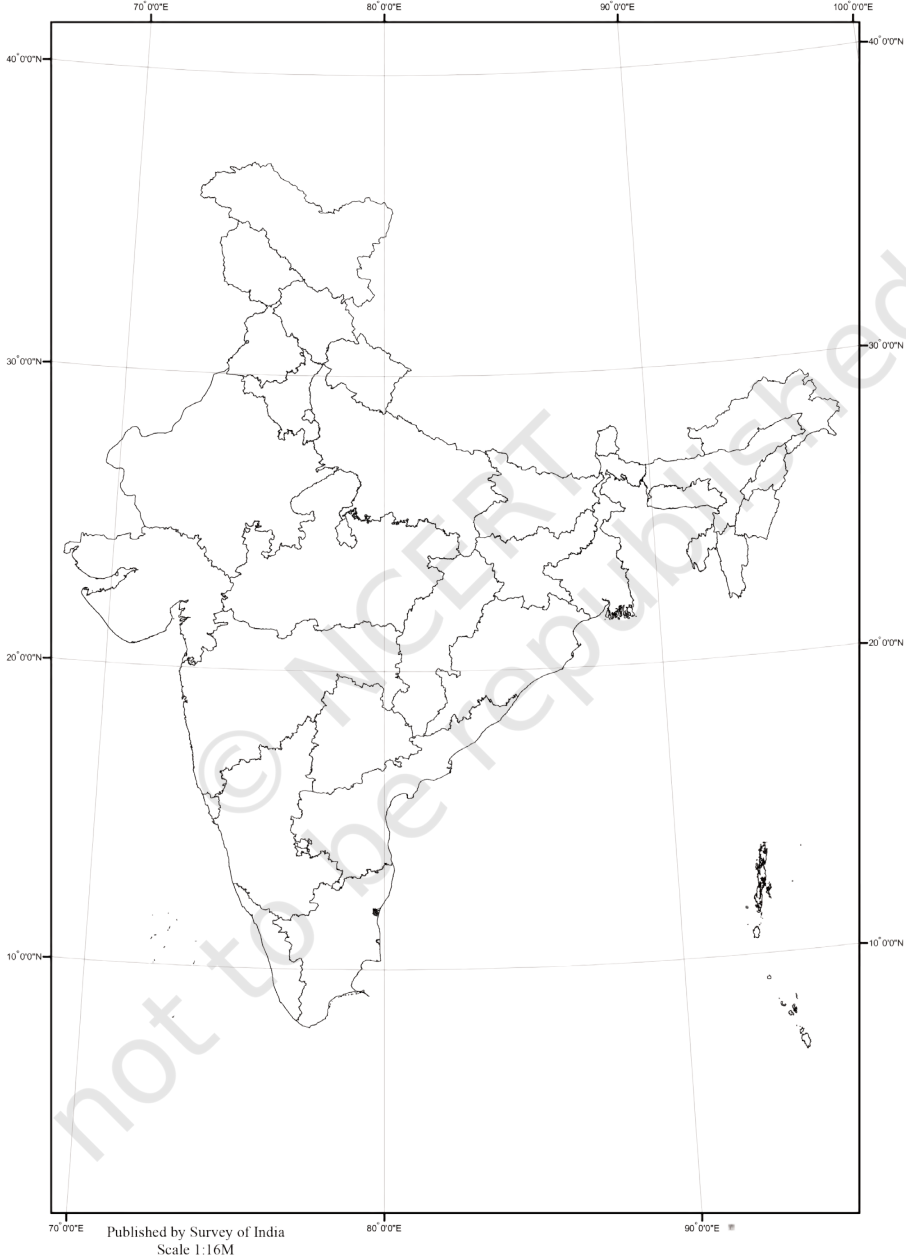
1. “लावारिस का वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य झाँसी आया”, ब्रिटिश राज किस नीति के कारण ‘लावारिस का वारिस’ बन जाता था? अपने इतिहास के शिक्षक से पता लगाकर उस नीति के विषय में लिखिए।
2. इस कविता में लक्ष्मीबाई की जीवन-गाथा के साथ-साथ अनेक वीरों के त्याग और बलिदान का भी उल्लेख है। उनकी सूची बनाइए तथा शिक्षक की सहायता से 1857 की क्रांति में उनके योगदान के विषय में लिखिए।
3. यह कविता जिस समय और परिवेश में लिखी गई है, उसमें युद्ध और अन्य साहसिक कार्य करना सामान्यतः पुरुषों का क्षेत्र माना जाता था। वर्तमान में लगभग हर क्षेत्र में महिलाएँ कार्य कर रही हैं। नीचे कुछ ऐसे ही कार्यक्षेत्र दिए गए हैं। इन क्षेत्रों में काम करने वाली स्त्रियों के नाम और उनके विषय में लिखिए। आप चाहें तो इसमें अपनी समझ के अनुसार कुछ और कार्यक्षेत्र भी जोड़ सकते हैं।

कार्यक्षेत्र

1. दमकल केंद्र (फायर ब्रिगेड)
2. रेलगाड़ी चालक
3. खेल के विभिन्न क्षेत्र
4. व्यापार और प्रबंधन
5. विज्ञान और तकनीक



4. कविता में 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित अनके स्थानों के नाम आए हैं। अपने शिक्षक की सहायता से दिए गए मानचित्र में उन स्थानों/नगरों को चिह्नित करके नाम लिखिए।



स्रोत— https://surveyofindia.gov.in/UserFiles/files/1_16-state%20boundary.pdf





भाषा से संवाद

व्याकरण की बात

शब्द एक अर्थ अनेक

1. “कानपूर के नाना की मुँहबोली बहन ‘छबीली’ थी”

उपर्युक्त पंक्ति में रेखांकित शब्द पर ध्यान दीजिए। कविता में ‘नाना’ शब्द ‘नाना धुंधूपंत’ के लिए प्रयुक्त हुआ है। लेकिन इस शब्द का प्रयोग संदर्भ के अनुसार अन्य अर्थों में भी होता है। जैसे—माता के पिता के लिए तथा अनेक के अर्थ में। इस प्रकार अनेकार्थी शब्द वह शब्द है जिसके एक से अधिक अर्थ होते हैं। नीचे तालिका में दी गई कविता की पंक्तियों में रेखांकित शब्द अनेकार्थी शब्द हैं। कविता के संदर्भ में उनके सही अर्थ पर घेरा लगाइए।

काव्य-पंक्ति	अर्थ
• तीर चलाने वाले कर में उसे चूड़ियाँ कब भाई	नदी का किनारा, बाण, सीसा
• रानी विधवा हुई हाय! <u>विधि</u> को भी नहीं दया आई	शास्त्र में लिखी व्यवस्था, प्रणाली, विधाता, तरीका
• रानी ने तलवार खींच ली, हुआ द्वंद्व असमानों में	युद्ध, संशय, युग्म
• हो मदमाती विजय, मिटा दे <u>गोलों</u> से चाहे झाँसी	किसी पदार्थ का गोल पिंड, रस्सी/सूत/बर्फ का गोला, तोप से दागने वाले गोले, नारियल
• मिला <u>तेज</u> से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी	आभा, गति, तेज चाकू (धार)

2. “कानपूर के नाना की मुँहबोली बहन ‘छबीली’ थी”

“मेरठ, कानपुर, पटना ने भारी धूम मचाई थी”

उपर्युक्त पंक्तियों में रेखांकित शब्दों की वर्तनी पर ध्यान दीजिए। दोनों शब्दों की वर्तनी में थोड़ी भिन्नता है। कई बार रचनाकार कविता की लय, अर्थ की लय इत्यादि को ध्यान में रखते हुए भाषा के स्तर पर इस प्रकार का प्रयोग करते रहे हैं। इस कविता में अन्य शब्दों के भी ऐसे प्रयोग मिलते हैं, उन्हें ढूँढ़कर लिखिए और कक्षा में चर्चा कीजिए।

इसी पाठ्यपुस्तक की अन्य कविताओं में भी आपने ऐसा प्रयोग देखा होगा। जहाँ किसी शब्द की मानक वर्तनी से भिन्न वर्तनी का प्रयोग किया गया है। अपने शिक्षक के साथ इस विषय पर चर्चा कीजिए। चर्चा से उभरे बिंदुओं को लिखकर उन पर अपने शिक्षक के साथ पुनः चर्चा कीजिए कि ऐसे प्रयोग क्यों किए गए हैं?



मुहावरे

- “दूर फ़िरंगी को करने की सबसे मन में ठानी थी”

उपर्युक्त पंक्ति में ‘दृढ़ निश्चय करने’ के अर्थ को व्यक्त करने के लिए ‘मन में ठान लेना’ वाक्यांश का प्रयोग हुआ है जो एक मुहावरा है। ‘मुहावरे’ ऐसे वाक्यांश होते हैं जो अपने शाब्दिक अर्थ से भिन्न एक विशेष और लाक्षणिक अर्थ व्यक्त करते हैं। इनके प्रयोग से भाषा में सौंदर्य और प्रभाव उत्पन्न होता है।

पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। उन पंक्तियों में आए मुहावरे ढूँढ़कर लिखिए और उन मुहावरों का प्रयोग करते हुए नए वाक्य भी बनाइए। आपकी सुविधा के लिए एक उदाहरण दिया गया है।

	काव्य पंक्ति	प्रयुक्त मुहावरा	नया वाक्य
1.	अबके जनरल स्मिथ सन्मुख था, उसने मुँह की खाई थी	मुँह की खाना	मोहन ने सोचा था कि वह आसानी से जीत जाएगा लेकिन अंत में उसे मुँह की खानी पड़ी।
2.	डलहौजी ने पैर पसारे अब तो पलट गई काया		
3.	राजाओं नव्वाबों को भी उसने पैरों ठुकराया		
4.	हुआ यज्ञ प्रारंभ उन्हें तो/सोई ज्योति जगानी थी		
5.	मेरठ, कानपुर, पटना ने भारी धूम मचाई थी		



सृजन

- लक्ष्मीबाई की सखियों काना तथा मंदरा की ओर से लक्ष्मीबाई को एक पत्र लिखिए जिसमें काना तथा मंदरा द्वारा ब्रिटिश हुकूमत के विरुद्ध युद्ध की रणनीति पर चर्चा की गई हो।
- युद्धपूर्व रात्रि में झाँसी की रानी के मन में अगले दिन की संभावनाओं को लेकर कई तरह के भाव और विचार उठ रहे होंगे। आपके जीवन में भी कई ऐसे क्षण आए होंगे जब आपने मानसिक ऊहापोह का अनुभव किया होगा। ऐसी किसी घटना के विषय में अपनी डायरी में लिखिए, जैसे— परीक्षा के एक दिन पूर्व की स्थिति या नौवीं कक्षा में पहला दिन आदि।





गतिविधियाँ

• शौर्य के समाचार

यह कविता रानी लक्ष्मीबाई के जीवन की घटनाओं, उनकी वीरता और पराक्रम से हमारा साक्षात्कार कराती है। कविता में वर्णित घटनाओं को एक समाचार-वाचक की तरह समाचार के रूप में प्रस्तुत कीजिए।

(संकेत— “आज झाँसी की रणभूमि पर रानी लक्ष्मीबाई ने अपनी अद्भुत वीरता और शौर्य का परिचय दिया...।”)

• ‘हरबोलों’ और हमारी कहानी

“बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।”

‘हरबोला’ बुंदेलखंड क्षेत्र में रहने वाले लोकगायकों का एक समुदाय है जिन्होंने रानी लक्ष्मीबाई की वीरतापूर्ण गाथा को अपने गीतों के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने का काम किया। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में लोकगायकों की एक लंबी और समृद्ध परंपरा रही है। इनके द्वारा गाए जाने वाले गीत सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक मूल्यों को संरक्षित करने का एक जीवंत माध्यम हैं। आपके क्षेत्र में अथवा आपकी भाषा में भी ऐसे लोकगायक और उनके द्वारा गाए जाने वाले देशभक्तिपूर्ण गीत अवश्य प्रचलित होंगे। ऐसे गीतों का एक संकलन तैयार कीजिए और कक्षा में साझा कीजिए।

भाषा संगम

“कानपूर के नाना की मुँहबोली बहन ‘छबीली’ थी।”

नीचे ‘बहन’ शब्द के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित कुछ भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त शब्दों की सूची दी गई है।

बहन (हिंदी); भगिनी, स्वसृ: (संस्कृत); भैण (पंजाबी); बहन, हमशीरा (उर्दू); बैनी (कश्मीरी); भेण (सिंधी); बहीण (मराठी); बहेन (गुजराती); भयण (कोंकणी); बैनी, दीदी (नेपाली); बोन, भगिनी (बांग्ला); भनी, बाइ, बाइदेउ (असमिया); मचन, मनाओ (मणिपुरी); भउणी (ओड़िआ); अक्क, चेल्लेलु (तेलुगू); तंगै, अक्का (तमिल); सहोदरि, पेड्डळ् (मलयालम); सोदरि, अक्क, तंगि (कन्नड़)।

- इनके अतिरिक्त यदि आप ‘बहन’ शब्द को किसी और भाषा में भी जानते हैं तो उस भाषा में भी लिखिए।
- उपर्युक्त वाक्य को अपनी मातृभाषा में भी लिखिए।

<https://shabd.education.gov.in/lexicon.jsp>





कविता में लक्ष्मीबाई की दो सखियों 'काना' और 'मंदरा' का उल्लेख मिलता है जो युद्धक्षेत्र में अंत तक लक्ष्मीबाई के साथ रहीं। लक्ष्मीबाई की सहेलियों में ऐसी ही एक और वीरांगना का नाम आता है, जिनका नाम था 'झलकारी बाई'। इन्होंने भी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान बहुत ही वीरता के साथ अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई लड़ी। नीचे दिए गए लेख को पढ़कर आप 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान के विषय में जान सकते हैं।



झलकारी बाई

इतिहास के पन्नों में लुप्त, यह एक महान योद्धा की कहानी है जिसने 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के दौरान बहादुरी से लड़ाई लड़ी थी। एक सामान्य परिवार से ताल्लुक रखने वाली झलकारी बाई केवल अपनी दृढ़ता और साहस से प्रेरित थीं जो आगे चलकर एक आदरणीय योद्धा बनीं।



झलकारी बाई का जन्म 22 नवंबर 1830 को झाँसी के निकट भोजला गाँव में हुआ था। वह बड़ी होकर एक सैनिक और रानी लक्ष्मीबाई की विश्वसनीय सलाहकारों में से एक बन गईं। उन्होंने बहुत कम उम्र में ही घुड़सवारी, अस्त्र-शस्त्र की कला और एक योद्धा की तरह लड़ना सीख लिया था। उन्होंने अपने पति पून कोरी से तीरंदाजी, कुश्ती और निशानेबाजी भी सीखी। पून कोरी रानी लक्ष्मीबाई के पति राजा गंगाधर राव की सेना में एक सैनिक थे।

झलकारी बाई अक्सर अपने पति के साथ शाही महल जाया करती थीं। रानी लक्ष्मीबाई को उनकी बहादुरी के बारे में पता चलने के बाद, वे उनकी अच्छी सहेली बन गईं। झलकारी बाई का शारीरिक गठन और उनका चेहरा रानी लक्ष्मीबाई से मिलता-जुलता था।

जल्द ही, झलकारी बाई को रानी लक्ष्मीबाई की 'दुर्गा दल' नामक महिला सेना में पद मिल गया और वे अक्सर रानी की तरफ से महत्वपूर्ण निर्णय लिया करती थीं।

राजा गंगाधर राव के निधन के बाद, अंग्रेजों को उनका उत्तराधिकारी स्वीकार्य नहीं था, परंतु अंग्रेजों के विरोध के बावजूद, रानी लक्ष्मीबाई ने शासन की बागडोर संभालने का फैसला किया। लक्ष्मीबाई ने निकट भविष्य में होने वाली लड़ाई के लिए तैयारियाँ शुरू कर दीं। 1857 में, सिपाहियों का विद्रोह बढ़ गया और उत्तरी एवं मध्य भारत के बड़े हिस्सों में फैल गया। वे सिपाही रानी लक्ष्मी बाई का समर्थन करने के लिए एकत्र हुए। झलकारी बाई को सेना की महिला टुकड़ी का नेतृत्व करने की जिम्मेदारी सौंपी गई।





1858 में जब जनरल सर ह्यू रोज की कमान में अंग्रेजी सेना ने झाँसी के किले पर हमला किया और किले को घेर लिया तो झलकारी बाई और पूरन कोरी दोनों ने उसका कड़ा प्रतिरोध किया। झलकारी बाई ने जमकर लड़ाई लड़ी और रानी को अपने बच्चे के साथ महल छोड़ने का सुझाव दिया।

झलकारी बाई ने स्वयं रानी लक्ष्मीबाई का वेश धारण किया, सेना की कमान संभाली और अंग्रेजों से लड़ाई लड़ी। उनकी सरूपता ने अंग्रेजों को भ्रमित किए रखा और उनकी यह चाल लंबे समय तक काम करती रही। झलकारी बाई की असली पहचान के बारे में अंग्रेज अनिश्चित थे और उनकी वजह से ही रानी लक्ष्मीबाई अपने बेटे के साथ अपने महल से भाग सकीं।

हालाँकि उसी लड़ाई में, पूरन कोरी अंग्रेजों से लड़ते हुए मारे गए और जब झलकारी बाई ने यह सुना तो वह क्रोधित हो गई। उन्होंने कई अंग्रेज सैनिकों को मार डाला और उनसे जमकर लड़ाई लड़ी।

झलकारी बाई की यह कहानी बुंदेलखंड की लोक स्मृति का एक हिस्सा है। आज तक, उनकी स्मृति लोगों के मन में जीवित है और उनके बहादुर करतब वहाँ की लोककथाओं में बार-बार उभर कर सामने आते हैं। उनके सम्मान में हर साल झलकारी बाई जयंती मनाई जाती है। 'अमर शहीद' झलकारी बाई 1890 तक जीवित रहीं और वे अपने समय की शौर्य की प्रतिमूर्ति बन गई थीं।

साभार : <https://indianculture.gov.in/hi/node/2790247>



नीचे दी गई इंटरनेट कड़ियों तथा पुस्तकों के माध्यम से आप लक्ष्मीबाई तथा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की अन्य वीरांगनाओं और राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार से सम्मानित बालिका कांति के अदम्य साहस के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं—

<https://www.naidunia.com/chhattisgarh/ambikapur-national-bravery-award-sevenyearold-kanti-of-chhattisgarh-who-saves-her-sister-from-elephants-will-get-national-bravery-award-4677447>

https://youtu.be/nyoqcOriWPw?si=JT63xysbj_qgstCC - NCERT OFFICIAL

‘भारत की महान नारियाँ’ शृंखला की पुस्तकें, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित



शब्द-संपदा

फ़िरंगी	—	अंग्रेज, विलायती
मर्दानी/मर्दाना	—	बहादुर, पुरुषोचित
छबीली/छबीला	—	तेजस्वी, सुंदर, छबिवाली, सजीली
बरछी	—	छोटा भाला
ढाल	—	तलवार, भाले आदि के आघात को रोकने का लोहे का बना कछुए की पीठ जैसा एक साधन
गाथाएँ/गाथा	—	कथा, प्रशंसागीत
अवतार	—	उतरना, नीचे आना, किसी देवता या ईश्वर का मनुष्यादि के रूप में जन्म लेना
नाना	—	माता का पिता, मातामह, अनेक प्रकार के, कई तरह के, विविध, अनेक, बहुत
दुर्ग	—	गढ़, किला, कठिन या तंग रास्ता
सुभट	—	रणकुशल योद्धा
विरुदावलि/विरुद	—	विस्तृत यशोगान, कीर्ति-गाथा, वह कविता आदि जिसमें किसी के यश आदि का वर्णन किया गया हो, प्रशंसासूचक पदवी
विधि	—	सृष्टि की रचना करने वाला, कार्य करने का ढंग, संगति, मेल, प्रयोग, शास्त्रसम्मत, व्यवस्था, धर्मग्रंथ, समय
बिरानी/बिराना	—	पराया
बिसात	—	फैलाव, हैसियत, शक्ति, सामर्थ्य, पूंजी
निपात	—	गिरना, चलाना, फेंकना, पतन, विनाश
बेजार	—	दुखी, ऊबा हुआ
सन्मुख	—	सम्मुख, जो सामने हो, भिड़ने वाला, अनुकूल
कृतज्ञ	—	उपकार मानने वाला, एहसानमंद
अविनाशी	—	नाशरहित, अक्षय, नित्य
मदमाती/मदमाता	—	मस्त, मदमत्त
स्मारक	—	किसी की स्मृति-रक्षा के अभिप्राय से संस्थापित संस्था, भवन, स्तंभ आदि, याद दिलाने वाला





0901CH12

भवानीप्रसाद मिश्र



भवानीप्रसाद मिश्र का जन्म सन् 1913 में मध्य प्रदेश के होशंगाबाद (अब नर्मदापुरम) में हुआ था। साहित्य के साथ-साथ स्वाधीनता आंदोलन में जिन कवियों की सक्रिय भागीदारी थी, उनमें ये प्रमुख हैं। उनकी मुख्य रचनाएँ—गीत-फ़रोश, खुशबू के शिलालेख, चकित है दुख, अँधेरी कविताएँ, बुनी हुई रस्सी, कवितांतर, शतदल, गांधी-पंचशती, त्रिकाल संध्या आदि हैं। बुनी हुई रस्सी (कविता संग्रह) पर उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला है।

भवानीप्रसाद मिश्र ने राष्ट्रभाषा प्रचार समिति में कार्य किया और सन् 1952-55 तक हैदराबाद से प्रकाशित हिंदी की लोकप्रिय साहित्यिक पत्रिका कल्पना का संपादन भी किया। सन् 1955-58 के बीच वे आकाशवाणी के हिंदी कार्यक्रमों से संबद्ध रहे। उन्होंने संपूर्ण गांधी वाङ्मय का भी संपादन किया। सन् 1985 में उनका निधन हो गया।



भवानीप्रसाद मिश्र ने सन् 1942 के 'भारत छोड़ो आंदोलन' में सक्रिय रूप से भाग लिया जिसके चलते ब्रिटिश सरकार ने उन्हें तीन वर्ष के लिए कारावास का दंड दिया। 1942 के स्वाधीनता आंदोलन के समय जेल में रहते हुए ही उन्होंने 'घर की याद' कविता लिखी। परिवार की स्मृति ही इस कविता की केंद्रीय संवेदना है। कारावास के समय घर को याद करते हुए कवि की स्मृति में उनके परिजन एक-एक करके सम्मिलित होते चले जाते हैं। कवि सावन के बादल द्वारा परिवार को संदेश भेज रहा है और उससे आग्रह करता है कि वह उन्हें जेल के कष्टों के विषय में न बताए और सांत्वना दे।





घर की याद

आज पानी गिर रहा है,
बहुत पानी गिर रहा है,
रात-भर गिरता रहा है,
प्राण मन धिरता रहा है,

अब सबेरा हो गया है,
कब सबेरा हो गया है,
ठीक से मैंने न जाना,
बहुत सोकर सिर्फ माना—

क्योंकि बादल की अँधेरी,
है अभी तक भी घनेरी,
अभी तक चुपचाप है सब,
रातवाली छाप है सब,

गिर रहा पानी झरा-झरा,
हिल रहे पत्ते हरा-हरा,
बह रही है हवा सर-सर,
काँपते हैं प्राण थर-थर,

बहुत पानी गिर रहा है,
घर नजर में तिर रहा है,
घर कि मुझसे दूर है जो,
घर खुशी का पूर है जो,

घर कि घर में चार भाई,
मायके में बहिन आई,
बहिन आई बाप के घर,
हाय रे परिताप के घर!

आज का दिन दिन नहीं है,
क्योंकि इसका छिन नहीं है,
एक छिन सौ बरस है रे,
हाय कैसा तरस है रे,

घर कि घर में सब जुड़े हैं,
सब कि इतने कब जुड़े हैं,
चार भाई चार बहिनें
भुजा भाई प्यार बहिनें,

और माँ बिन-पढ़ी मेरी,
दुख में वह गढ़ी मेरी,
माँ कि जिसकी गोद में सिर,
रख लिया तो दुख नहीं फिर,

माँ कि जिसकी स्नेह-धारा
का यहाँ तक भी पसारा,
उसे लिखना नहीं आता,
जो कि उसका पत्र पाता।

और पानी गिर रहा है,
घर चतुर्दिक् धिर रहा है,
पिताजी भोले बहादुर,
वज्र-भुज नवनीत-सा उर,

पिताजी जिनको बुढ़ापा,
एक क्षण भी नहीं व्यापा,
जो अभी भी दौड़ जाएँ,
जो अभी भी खिलखिलाएँ,

मौत के आगे न हिचकें,
शेर के आगे न बिचकें,
बोल में बादल गरजता,
काम में झंझा लरजता,

आज गीता-पाठ करके,
दंड दो सौ साठ करके,
खूब मुगदर हिला लेकर,
मूठ उनकी मिला लेकर,

जब कि नीचे आए होंगे,
नैन जल से छाए होंगे,
हाय, पानी गिर रहा है,
घर नजर में तिर रहा है,



चार भाई चार बहिनें,
भुजा भाई प्यार बहिनें,
खेलते या खड़े होंगे,
नजर उनको पड़े होंगे।

पिताजी जिनको बुढ़ापा,
एक क्षण भी नहीं व्यापा,
रो पड़े होंगे बराबर,
पाँचवें का नाम लेकर,

पाँचवाँ मैं हूँ अभागा,
जिसे सोने पर सुहागा,
पिताजी कहते रहे हैं,
प्यार में बहते रहे हैं,

आज उनके स्वर्ण बेटे,
लगे होंगे उन्हें हेते,
क्योंकि मैं उन पर सुहागा
बँधा बैठा हूँ अभागा,

और माँ ने कहा होगा,
दुख कितना बहा होगा
आँख में किसलिए पानी,
वहाँ अच्छा है भवानी,

वह तुम्हारा मन समझकर,
और अपनापन समझकर,
गया है सो ठीक ही है
यह तुम्हारी लीक ही है,

पाँव जो पीछे हटाता,
कोख को मेरी लजाता,
इस तरह होओ न कच्चे,
रो पड़ेंगे और बच्चे,



पिताजी ने कहा होगा,
हाय, कितना सहा होगा,
कहाँ, मैं रोता कहाँ हूँ,
धीर मैं खोता, कहाँ हूँ,

गिर रहा है आज पानी,
याद आता है भवानी,
उसे थी बरसात प्यारी,
रात दिन की झड़ी झारी,

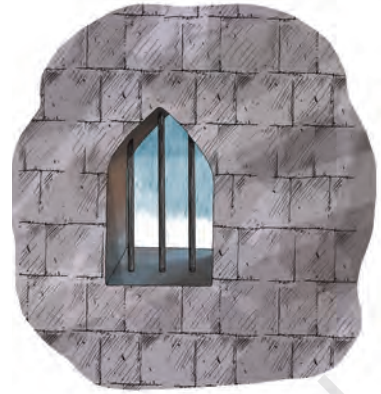
खुले सिर नंगे बदन वह,
घूमता फिरता मगन वह,
बड़े बाड़े में कि जाता,
बीज लौकी का लगाता,

तुझे बतलाता कि बेला
ने फलानी फूल झेला,
तू कि उसके साथ जाती,
आज इससे याद आती,

मैं न रोऊँगा — कहा होगा,
और फिर पानी बहा होगा,
दृश्य उसके बाद का रे,
पाँचवें की याद का रे,

भाई पागल, बहिन पागल,
और अम्मा ठीक बादल,
और भौजी और सरला,
सहज पानी सहज तरला,

शर्म से रो भी न पाएँ,
खूब भीतर छटपटाएँ,
आज ऐसा कुछ हुआ होगा
आज सबका मन चुआ होगा।



अभी पानी थम गया है,
मन निहायत नम गया है,
एक-से बादल जमे हैं,
गगन-भर फैले रमे हैं,

ढेर है उनका, न फाँकें,
जो कि किरनें झुकेँ-झाँकें,
लग रहे हैं वे मुझे यों,
माँ कि आँगन लीप दे ज्यों;

गगन-आँगन की लुनाई
दिशा के मन में समाई
दश-दिशा चुपचाप है रे,
स्वस्थ की लय छाप है रे

झाड़ आँखें बंद करके
साँस सुस्थिर मंद करके,
हिले बिन चुपके खड़े हैं,
क्षितिज पर जैसे जड़े हैं

एक पंछी बोलता है,
घाव उर के खोलता है,
आदमी के उर बिचारे,
किसलिए इतनी तृषा रे,



तू जरा-सा दुख कितना,
सह सकेगा क्या कि इतना,
और इस पर बस नहीं है,
बस बिना कुछ रस नहीं है,

हवा आई उड़ चला तू,
लहर आई मुड़ चला तू,
लगा झटका टूट बैठा,
गिरा नीचे फूट बैठा,

तू कि प्रिय से दूर होकर,
बह चला रे पूरे होकर,
दुख भर क्या पास तेरे,
अश्रु सिंचित हास तेरे!

पिताजी का वेश मुझको,
दे रहा है क्लेश मुझको,
देह एक पहाड़ जैसे,
मन कि बड़ का झाड़ जैसे,

एक पत्ता टूट जाए,
बस कि धारा फूट जाए,
एक हल्की चोट लग ले,
दूध की नद्दी उमग ले,

एक टहनी कम न हो ले,
कम कहाँ कि खम न हो ले,
ध्यान कितना फिक्र कितनी,
डाल जितनी जड़ें उतनी!

इस तरह का हाल उनका,
इस तरह का ख्याल उनका,
हवा, उनको धीरे देना,
यह नहीं जी चीर देना,

हे सजीले हरे सावन,
हे कि मेरे पुण्य पावन,
तुम बरस लो वे न बरसें,
पाँचवें को वे न तरसें,

मैं मजे में हूँ सही है,
घर नहीं हूँ बस यही है,
किंतु यह बस बड़ा बस है,
इसी बस से सब विरस है,

किंतु उनसे यह न कहना,
उन्हें देते धीरे रहना,
उन्हें कहना लिख रहा हूँ,
उन्हें कहना पढ़ रहा हूँ,

काम करता हूँ कि कहना,
नाम करता हूँ कि कहना,
चाहते हैं लोग, कहना
मत करो कुछ शोक, कहना,

और कहना मस्त हूँ मैं,
कातने में व्यस्त हूँ मैं,
वजन सत्तर सेर मेरा,
और भोजन ढेर मेरा,

कूदता हूँ खेलता हूँ,
दुख डटकर ठेलता हूँ,
और कहना मस्त हूँ मैं,
यों न कहना अस्त हूँ मैं,

हाय रे, ऐसा न कहना,
है कि जो वैसा न कहना,
कह न देना जागता हूँ,
आदमी से भागता हूँ,



कह न देना मौन हूँ मैं,
खुद न समझूँ कौन हूँ मैं,
देखना कुछ बक न देना,
उन्हें कोई शक न देना,

हे सजीले हरे सावन,
हे कि मेरे पुण्य पावन,
तुम बरस लो वे न बरसें,
पाँचवें को वे न तरसें।

अभ्यास



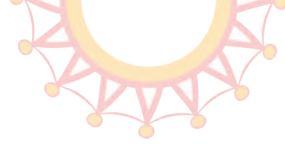
रचना से संवाद

मेरे उत्तर मेरे तर्क

निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

- भवानीप्रसाद मिश्र ने यह कविता कहाँ और क्यों लिखी?
 - विदेश से मित्र के लिए
 - युद्धभूमि से जनता के लिए
 - जेल से परिवार के लिए
 - यात्रा से किसी संबंधी के लिए
- लगातार बरसता पानी कवि के मन की किस भावना का परिचायक है?
 - उत्साह और आवेग
 - भय और क्रोध
 - साहस और उमंग
 - चिंता और बेचैनी
- कविता में माँ की कैसी छवि उभरती है?
 - कमजोर और निष्क्रिय
 - स्नेहमयी और दृढ़
 - शिक्षित और अनुशासनप्रिय
 - सरल और उदासीन
- “वज्र-भुज नवनीत-सा उर” पंक्ति के माध्यम से पिता के व्यक्तित्व की कैसी छवि प्रस्तुत की गई है?
 - कर्मठ और सृजनशील
 - साहसी और पराक्रमी





- (ग) दृढ़ और संवेदनशील
(घ) प्रसन्नचित्त और सक्रिय
5. “एक पत्ता टूट जाए, बस कि धारा फूट जाए” पंक्ति किस ओर संकेत करती है?
(क) पिता की कठोरता
(ख) पिता की भावुकता
(ग) वर्षा की तीव्रता
(घ) पिता की निर्बलता
6. “बहिन आई बाप के घर, हायरे परिताप के घर” पंक्ति में ‘परिताप’ शब्द से क्या संकेत मिलता है?
(क) घर का समृद्ध होना
(ख) घर की सजावट
(ग) घर में दुख का वातावरण
(घ) घर की शांति
7. “और कहना मस्त हूँ मैं” पंक्ति में कवि का ऐसा कहना किस बात की ओर संकेत करता है?
(क) कवि अपने जीवन में बहुत खुश है।
(ख) अपने दुख को परिजनों से छिपाना चाहता है।
(ग) घर के लोगों के प्रति उदासीन है।
(घ) कवि प्राकृतिक सौंदर्य से अभिभूत है।
8. इस कविता में किस बात को प्रमुखता से वर्णित किया गया है?
(क) घर की शांति और सुरक्षा
(ख) घर के सदस्यों के बीच का संबंध
(ग) घर के निर्माण की प्रक्रिया
(घ) घर की याद और अकेलेपन की पीड़ा

मेरी समझ मेरे विचार

नीचे दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा कीजिए और उनके उत्तर लिखिए—

- कविता में वर्णित पिता के व्यक्तित्व की उन विशेषताओं का वर्णन कीजिए जिनसे उनका बहुआयामी रूप सामने आता है।
- “दुख डटकर ठेलता हूँ” यह कथन मनुष्य के संघर्षशील स्वभाव को उजागर करता है। कविता के आधार पर बताइए कि कठिन परिस्थितियों में कवि किस प्रकार धैर्य, साहस और त्याग का परिचय देता है?
- कविता में बार-बार वर्षा का वर्णन कवि के भावों को किस प्रकार व्यक्त करता है?



- कविता से उन पंक्तियों को चुनकर लिखिए और भाव स्पष्ट कीजिए जिनसे माँ की भावनात्मक मजबूती का परिचय मिलता है।
- कविता का कौन-सा अंश आपको सबसे अधिक भावनात्मक और प्रभावी लगता है और क्यों?



विधा से संवाद

कविता का सौंदर्य

“ गिर रहा पानी झरा-झर, हिल रहे पत्ते हरा-हर,
बह रही है हवा सर-सर, काँपते हैं प्राण थर-थर”

उपर्युक्त पंक्तियों में रेखांकित शब्दों को ध्यानपूर्वक पढ़िए। यहाँ शब्दों का चयन और संयोजन इस प्रकार किया गया है कि कविता में ध्वन्यात्मकता और नाद सौंदर्य की सृष्टि हुई है। शब्दों के ऐसे प्रयोग से कविता आकर्षक बनती है। कविता में ऐसी अनेक विशेषताएँ हैं जो इसे जीवंत और प्रभावपूर्ण बनाती हैं। ऐसी कुछ विशेषताओं की सूची नीचे दी गई है। कविता से ऐसी विशेषताओं वाली पंक्तियों को ढूँढ़कर लिखिए।

विशेषताएँ

- स्मृति और दृश्य बिंब
- लोकभाषा की सहजता
- पंक्तियों का दोहराव
- आलंकारिक प्रयोग
- प्राकृतिक दृश्यों और भावों का संयोजन
- संबोधनात्मकता

कविता की संरचना

‘घर की याद’ कवि के भीतर उठते भावों की यात्रा है। कविता में प्रकृति के माध्यम से व्यक्त इस यात्रा के प्रमुख चरणों का वर्णन करें।

(संकेत— पानी का गिरना, सबेरा होना)



विषयों से संवाद

- कविता में चित्रित ‘घर’ एक भौतिक स्थान से बढ़कर भावनाओं और संबंधों के केंद्र के रूप में चित्रित हुआ है। वर्तमान में एकल परिवारों के बढ़ते चलन के संदर्भ में संयुक्त परिवार और





एकल परिवार की तुलना कीजिए और कारण सहित लिखिए कि दोनों की कौन-कौन-सी बातें आपको पसंद हैं और कौन-कौन-सी नापसंद?

2. कविता में बार-बार पानी गिरने का वर्णन है। लगातार बारिश होती रहे तो ग्रामीण और शहरी क्षेत्र में किस प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं?
3. कविता में सावन के बादल का प्रयोग एक संचार माध्यम के रूप में किया गया है जिसके द्वारा कवि अपने परिवार तक संदेश भेज रहा है। कक्षा में संचार के नए-पुराने माध्यमों में अंतर बताते हुए चर्चा कीजिए और लिखिए।
4. भवानीप्रसाद मिश्र ने यह कविता स्वतंत्रता संग्राम के दौरान कारावास में लिखी थी। अपने शिक्षक और पुस्तकालय की सहायता से 'भारत का स्वतंत्रता संग्राम' विषय पर लेख लिखिए।



1. कल्पना कीजिए कि कवि की माँ को पत्र लिखना आता है। कविता में वर्णित उनकी छवि और अनुमान के आधार पर लिखिए कि वे कवि के लिए पत्र में क्या-क्या लिखतीं?
2. कविता में माँ और पिताजी के बीच कवि के विषय में की जाने वाली बातचीत का वर्णन है। उनकी इस बातचीत को संवाद-लेखन के रूप में प्रस्तुत कीजिए।
3. इस कविता में कवि ने सावन के बादल को संदेशवाहक बनाया है। अगर आपको किसी प्राकृतिक उपादान के माध्यम से अपने घर, मित्र या किसी संबंधी व्यक्ति को कोई संदेश भेजना हो तो आप किसे चुनेंगे और क्यों?



व्याकरण की बात

1. “आज सबका मन चुआ होगा।”

उपर्युक्त पंक्ति में रेखांकित शब्द कवि की क्षेत्रीय/स्थानीय भाषा का शब्द है। कविता में स्थानीय भाषा के शब्दों का सहज प्रयोग हुआ है। कविता से कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। उनमें रेखांकित शब्दों का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनसे नए वाक्य बनाइए।

- एक छिन सौ बरस है रे
- तुझे बतलाता कि बेला/ने फलानी फूल झेला
- और भौजी और सरला, सहज पानी सहज तरला
- मन कि बड़ का झाड़ जैसे



2. नीचे दी गई कविता की पंक्तियों में आए शब्दों की व्याकरणिक पहचान लिखिए। आपकी सहायता के लिए एक उदाहरण नीचे दिया गया है।

(क) “बहुत पानी गिर रहा है”

- ‘पानी’ शब्द है — संज्ञा
- ‘बहुत’ शब्द है — विशेषण
- ‘गिर रहा है’ है — क्रिया

(ख) “पिताजी जिनको बुढ़ापा, एक क्षण भी नहीं व्यापा”

- ‘बुढ़ापा’ शब्द है —
- ‘व्यापा’ शब्द है —
- ‘जिनको’ शब्द है —

(ग) “खुले सिर नंगे बदन वह, घूमता फिरता मगन वह”

- ‘खुले’ शब्द है —
- ‘वह’ शब्द है —
- ‘बदन’ शब्द है —
- ‘फिरता’ शब्द है —

(घ) “एक पत्ता टूट जाए, बस कि धारा फूट जाए”

- ‘एक’ शब्द है —
- ‘फूट जाए’ है —
- ‘पत्ता’ शब्द है —

(ङ) “हे सजीले हरे सावन, हे कि मेरे पुण्य पावन”

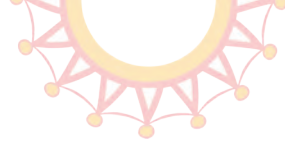
- ‘सजीले’ शब्द है —
- ‘मेरे’ शब्द है —
- ‘सावन’ शब्द है —



गतिविधियाँ

1. कवि ने कविता में अपने परिवार का उल्लेख किया है। आप भी अपना एक परिवार-वृक्ष तैयार कीजिए और प्रत्येक सदस्य के व्यक्तित्व के बारे में कुछ पंक्तियाँ लिखिए।
2. कविता में प्रयुक्त ध्वनि आधारित शब्द (जैसे— झरा-झर, थर-थर, सर-सर) को पढ़कर एक छोटी-सी ऑडियो रिकॉर्डिंग या मौखिक पाठ तैयार कीजिए। बताइए कि ये शब्द कविता में कैसे वातावरण का निर्माण करते हैं?





भाषा संगम

“घर कि घर में सब जुड़े हैं”

नीचे ‘घर’ शब्द के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त शब्दों की सूची दी गई है।

मकान, गृह, निवास (हिंदी); गृहम् (संस्कृत); घर (पंजाबी); घर (उर्दू); गॅरु (कश्मीरी); घरु (सिंधी); घर (मराठी); घर (गुजराती); घर (कोंकणी); घर, आवास (नेपाली); घर, बाड़ी (बांग्ला); घर (असमिया); युम (मणिपुरी); घर, गृह, आलय, आबास (ओड़िआ); इल्लु (तेलुगु); वीडु, इल्लम् (तमिल); वीडु, इल्लम (मलयालम); गृह, मने (कन्नड़)।

- इनके अतिरिक्त यदि आप ‘घर’ शब्द को किसी और भाषा में भी जानते हैं तो उस भाषा में भी लिखिए।
- उपर्युक्त वाक्य को अपनी मातृभाषा में भी लिखिए।

<https://shabd.education.gov.in/lexicon.jsp>



स्वोजबीन

- शिक्षक की सहायता से ऐसी किसी अन्य कविता अथवा कहानी के बारे में जानकारी एकत्रित कीजिए जिसमें घर, परिवार की याद जैसी भावनाएँ चित्रित हों। साथ ही पुस्तकालय अथवा इंटरनेट की सहायता से उस रचना को कक्षा में पढ़कर एक संक्षिप्त प्रस्तुति दीजिए।
- ‘घर की याद’ कविता में कवि सावन के बादलों को दूत बनाकर अपने परिवार के पास संदेश ले जाने का आग्रह करता है। प्रकृति के उपादानों की कल्पना संदेशवाहक के रूप में करने के अनेक उदाहरण साहित्य में मिलते हैं। शिक्षक, पुस्तकालय और इंटरनेट की सहायता से ऐसी कुछ रचनाओं के बारे में पता लगाइए और बताइए कि इनमें प्रकृति के किन उपादानों को संदेशवाहक बनाया गया है?

शब्द-संपदा

घनेरा/घना	—	गाढ़ा, गुंजान, जिसके अवयव पास-पास सटे हों
तिर/तिरना/तरना	—	तैरना, उतराना, पार होना
परिताप	—	अत्यधिक दुख, शोक, भय, बहुत गर्मी, अत्यधिक ताप
चतुर्विक्	—	चारों ओर, चौखूँट



वज्र	—	बहुत कठोर, जिस पर किसी का प्रभाव न पड़े
नवनीत	—	ताजा मकखन
उर	—	हृदय, श्रेष्ठ, उत्तम, मन
झंझा	—	तेज हवा, आँधी-पानी, खोई हुई वस्तु, झंकार
लरजता/लरजना	—	काँपना, हिलना-डुलना, दहल जाना, भयभीत
मूठ	—	मुट्ठी-भर चीज, कब्जा, मुट्ठी, दस्ता
अभाग	—	भाग्यहीन
धीर	—	जिसका चित्त विकारजनक कारणों के रहते हुए भी विचलित न हो, दृढ़, गंभीर
झारी	—	पानी परसने, हाथ मुँह धुलाने आदि के लिए काम में लाया जाने वाला टोटीदार बर्तन
बेला	—	एक सुगंधित फूल, मोगरा, कटोरा
फलानी/फलाना/फलाँ	—	कोई आदिष्ट (व्यक्ति या वस्तु), अमुक
निहायत	—	बहुत ज्यादा, अत्यधिक
लुनाई	—	सुंदरता, सलोनापन, फसल काटने की क्रिया
क्षितिज	—	वह स्थान जहाँ धरती और आकाश मिले दिखाई देते हैं, वृक्ष
तृषा	—	तीव्र इच्छा, अभिलाषा, लोभ, प्यास
अश्रु	—	आँसू
हास	—	हँसने की क्रिया, प्रसन्नता, खुशी, चौंध पैदा करने वाली सफेदी
क्लेश	—	दुख, पीड़ा, क्रोध, राग, द्वेष
बड़	—	बरगद, वट
उमग	—	उल्लास, मौज, जोश, आकांक्षा
खम	—	झुका हुआ, टेढ़ा, वक्र, घुमाव, टेढ़ापन
विरस	—	नीरस, अप्रिय, जी उबाने वाला, कष्टकर
कातने/कातना	—	चरखे या तकली पर रुई या ऊन से धागा निकालना, सन से सुतली बनाना
अस्त	—	डूबा हुआ, फेंका हुआ, समाप्त, (सूर्य-चंद्र का) डूबना, अदृश्य होना, पतन, अंत



तब याद तुम्हारी आती है

जब बहुत सुबह चिड़ियाँ उठकर, कुछ गीत खुशी के गाती हैं।
कलियाँ दरवाजे खोल-खोल, जब दुनिया पर मुसकाती हैं।
जब ठंडी-ठंडी हवा कहीं से, मस्ती ढोकर लाती है।
हे जग के सिरजनहार प्रभो! तब याद तुम्हारी आती है।

चुपचाप चमकते तारों की, महफिल जब रात सजाती है।
जब चाँद शान से उठता है, दिल की दुनिया जग जाती है।
कुछ पता नहीं, लेकिन जरूर, वह संदेशा कुछ पाती है।
हे जग के सिरजनहार प्रभो! तब याद तुम्हारी आती है!!

— रामनरेश त्रिपाठी

